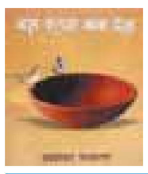

04 - अपने समय का भाष्य करती कविताएं

05 - मूर्तन तथा अमूर्तन के बीच झूलती कृतियाँ

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 09 फरवरी, 2025

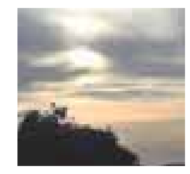

06 -फसलों को फायदा, सर्द हवाओं के कारण बढ़ी ठिठुरन

07 - 25 साल से अमिताभ 'केबीसी' में ही लॉक

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 160, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

(डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

दिल्ली प्रदेश विस चुनाव में भाजपा की प्रचंड विजय पर भोपाल में भाजपा कार्यकर्ताओं ने इस अनोखे अंदाज में जश्न मनाया। फोटोः प्रवीण वाजपेयी

दिल्ली पर भगवा का परचम

● 27 साल बाद फिर खिला कमल, हासिल की बंपर जीत ● पीएम मोदी ने कहा- विकास और सुशासन की हुई जीत ● केजरीवाल ने कहा-हार स्वीकार, हम शानदार चुनाव लड़े

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा ने दिल्ली में 27 साल बाद स्पष्ट बहुमत हासिल किया। दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों में से भाजपा ने 48 और आम आदमी पार्टी ने 22 सीटें जीतीं। कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली है। भाजपा ने 1993 में 49 सीटें यानी दो तिहाई बहुमत हासिल किया था। 5 साल की सरकार में मदन लाल खुराना, साहिब सिंह वर्मा और सुषमा स्वराज सीएम बनाए गए थे। 1998 के बाद कांग्रेस ने 15 साल राज किया। इसके बाद 2013 से आम आदमी पार्टी की सरकार थी। इस बार भाजपा की 71 फीसदी स्ट्राइक के साथ 40 सीटें बढ़ीं। पार्टी ने 68 पर चुनाव लड़ा, 48 सीटें जीतीं। वहीं, एएपी को 40 सीटों का नुकसान हुआ। आप का स्ट्राइक रेट 31 फीसदी रहा। भाजपा ने पिछले चुनाव (2020) के मुकाबले वोट शेयर में 9 फीसदी से ज्यादा का इजाफा किया। वहीं, एएपी को करीब 10 फीसदी का नुकसान हुआ है। कांग्रेस को भले ही एक भी सीट नहीं मिली, लेकिन वोट शेयर 2 फीसदी बढ़ाने में कामयाब रही। कांग्रेस दिल्ली में जीरो थी, जीरो ही रही। लेकिन आम आदमी पार्टी को जरूर हरवा दिया। 14 सीटों पर आम आदमी पार्टी की हार का अंतर, कांग्रेस के मिले वोटों से कम है।

दिल्ली में झूठ के शासन का हो गया अंतः शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत को झूठ के शासन का अंत और विकास व विश्वास के एक नए युग का आरंभ बताया।

महाकुंभ सनातन संस्कृति का है गौरवशाली उत्सव

उज्जैन सिंहस्थ के भव्य आयोजन के संकल्प के साथ आया हूं प्रयागराज : डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि महाकुंभ सनातन संस्कृति का गौरवशाली उत्सव है। विशेष ग्रह नक्षत्रों के शुभ संयोग में होने वाले महाकुंभ में सभी की आस्था का प्रकटीकरण होता है। साथ ही साधु-संतों के सान्निध्य में आत्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का अवसर भी प्राप्त होता है। भारत वर्ष में प्रत्येक 12 वर्ष में अलग-अलग चार नगरों में होने वाले कुंभ में स्नान का अवसर कई जन्मों के पुण्य से प्राप्त होता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रयागराज के महाकुंभ में पधारे श्रद्धालुओं को इस सौभाग्य के लिए शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि वे उज्जैन में होने वाले सिंहस्थ-2028 के दिव्य और भव्य आयोजन की तैयारी के संकल्प के साथ प्रयागराज आए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पवित्र संगम में डुबकी लगाने के बाद प्रदेशवासियों के कल्याण की कामना की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रयागराज महाकुंभ में स्नान के बाद कहा कि माँ गंगा, जमुना और सरस्वती की कृपा है, संगम का किनारा है। प्रयागराज सभी तीर्थों का राजा है। यहां आज कुंभ स्नान का जो आनंद आया है वह कई जन्मों के पुण्य के बाद प्राप्त होता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि माँ गंगा, यमुना और सरस्वती का प्रवाह अनंत काल तक निर्बाध रहे, सबका मंगल एवं कल्याण हो, ऐसी कामना करता हूँ।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रयागराज महाकुंभ के सफल आयोजन के लिए उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं राज्य सरकार को बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आशीर्वाद से उत्तरप्रदेश सरकार ने इस भव्य महाकुंभ का कुशलता से आयोजन किया है।

सुप्रभात

एक
पत्ता गिरा
टहनी कसमसाई

ओंस की
इक बूँद ने
संवेदनाओ
के गीत सुनाये

एक चिड़िया
ने आँख मटकाई
फुदक कर
उस टहनी पर
कई बार चहचहाई

एक कली की
किलकारी गूंजी

दूर से आती
हवा खिलखिलायी

और
छा गया
बसंत पूरे पेड़ पर !

\- त्रिलोचना कौर

केजरीवाल ने शराब पर किया फोकस धन और सत्ता में बह गए: अन्ना हजारे

मुंबई (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनना रिजल्ट 2025 की तस्वीर जैसे-जैसे साफ होने लगी वैसे ही आम आदमी पार्टी की हार तय मानी जा रही है। इसी बीच अन्ना हजारे ने एक बार फिर अरविंद केजरीवाल को 'आईना' दिखाया है। उन्होंने कहा कि मैंने पहले ही कह दिया था। उन्होंने अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधते हुए कहा कि उन्होंने शराब की दुकानों पर फोकस किया और धन-दौलत के चक्कर में बह गए। अन्ना हजारे एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने लोकपाल बिल की मांग को लेकर भूख हड़ताल की थी। यही वह अन्ना आंदोलन था जहां से अरविंद केजरीवाल का नाम पूरे देश में सामने आया। उन्होंने अन्ना आंदोलन का समर्थन किया। बाद में वह राजनीति में आ गए। कहा जाता है कि अन्ना केजरीवाल की राजनीति के खिलाफ थे।

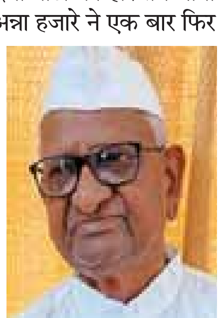

दिल्ली चुनाव विश्लेषण

दिल्ली विस चुनावः आप को आपदा साबित करने में सफल हुई भाजपा

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क- 9893699939
ajaybokil@gmail.com

यूं दिल्ली विधानसभा और सरकार की हैसियत किसी बड़े नगर निगम से ज्यादा नहीं है, लेकिन इसकी हार-जीत का संदेश देश की राजनीति की दिशा और दशा जरूर तय करता है। इस बार दिल्ली राज्य विधानसभा के चुनाव में डेढ़ दशक से सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी की करारी हार सत्ता स्वार्थ के आगे नैतिकता को आवारा छोड़ने की धूर्तता, कथनी और करनी में लगातार गहराते अंतर और भ्रष्टाचार के खिलाफ चले अण्णा आंदोलन के बाद उभरी वैकल्पिक राजनीति में नैतिक उम्मीद की भी करारी हार है। बेशक इस कांटे की लड़ाई में देश पर राज कर रही बीजेपी ने तीन दशक बाद अपनी जबर्दस्त चुनावी रणनीति से दिल्ली राज्य का किला सर कर लिया है, तो इसके पीछे बड़ी वजह देश की राजधानी के मतदाता का आम आदमी पार्टी से हुआ मोहभंग है। इस चुनाव नतीजे के तीन सबक हैं। पहला तो यह कि कोई भी राजनीति पार्टी भले ही कितनी नीतिमत्ता के दावे करे, सत्ता की काजल की कोठरी के दाग से नहीं बच पाती। दूसरे, केवल रेवड़ी बांटना ही अब चुनावी जीत का प्रमुख कारण नहीं रह गया है। वरना इस रेवड़ी कल्चर के पोस्टर ब्वॉय खुद अरविंद केजरीवाल अपनी सीट नहीं गंवाते। तीसरा, चुनाव कैसे जीते जाते हैं, यह दूसरे राजनीतिक दलों को भाजपा से सीखना चाहिए।

भारतीय जनता पार्टी के लिए देश की राजधानी में तीन बार भगवा फहराने के बाद भी लाल किले की प्राचीर आम आदमी पार्टी का अभेद्य किला बनी हुई थी। शुरू में केजरीवाल की अलग सियासी लाइन ने दिल्ली के मतदाताओं को मोहित किया था। कांग्रेस, बीजेपी और साम्यवादियों की वैचारिक राजनीतिक लाइन से हटकर आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सत्ता पर काबिज रहने की एक ऐसी गड्डमड्ड संस्कृति विकसित कर ली थी, जिसमें मतदाता को मुफ्तखोरी का लती बनाना, खुद अपनी ईमानदारी का ढिंढोरा पीटना, वक्त पड़ने पर मुकर जाना, खुद को धार्मिक व्यक्ति तथा गरीब हितैषी के रूप में पेश करना शामिल था। सबसे बड़ी विडंबना ये कि भ्रष्टाचार जैसी जिस गंभीर सामाजिक राजनीतिक बुराई के खिलाफ लड़ने के संकल्प के साथ आप दिल्ली में सत्ता में आई थी, वो खुद शराब घोटाले के रूप में उसी में डुबकी लगाने लगी, बावजूद इसके कि व्यक्तिगत तौर पर केजरीवाल और उनकी मंडली का इस घोटाले में लिप्त होना अभी अदालत में साबित होना है। लेकिन भ्रष्टाचार का दाग वास्तविक भ्रष्टाचार से कहीं ज्यादा गहरा होता है, जो आसानी से नहीं छूटता। 'कट्टर ईमानदार' जैसा अनोखा मुहावरा हिंदी को अरविंद केजरीवाल ने ही दिया था, लेकिन चुनाव नतीजे बता रहे हैं कि जनता ने उन्हें कट्टर बेईमान के आईने में देखा।

इस चुनाव में आप की करारी हार के लिए भाजपा के आक्रामक प्रचार से अधिक आप की गलतियां ज्यादा जिम्मेदार है। इसकी एक बड़ी वजह केजरीवाल का अहंभावी होना है। उनकी हार की सबसे ज्यादा खुशी उनके पूर्व साथियों और आप के हाथों दिल्ली में अपनी राजनीतिक जमीन गंवाने वाली कांग्रेस को है, जो चुनाव में एक भी सीट न जीतने के बावजूद इस बात से गदगद है कि केजरीवाल हारे और कांग्रेस का वोट 2 फीसदी बढ़ा। उधर आप अपनी सरकार के पहले कार्यकाल में किए गए कुछ कामों और साथ में बांटी जा रही रेवड़ियों को सत्ता का आजीवन पट्टा मान कर चल रही थी। जिसे दिल्ली के मतदाता ने ही निरस्त कर दिया है। केजरीवाल की गारंटियों और वैकल्पिक राजनीति के वादों पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी और दिल्ली के समुचित विकास के वादे भारी पड़े हैं। इस नतीजे में यह संदेश भी निहित है कि कोई राज्य सरकार हर मुद्दे पर केन्द्र सरकार से टकराव लेकर सत्ता में बने रहना चाहेगी तो यह लंबे समय तक मुमकिन नहीं है, बावजूद इसके कि बीजेपी ने भी केजरीवाल के हाथो में बेड़ियां डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी थीं।

आप की इस हार का बड़ा कारण दिल्ली में मध्य वर्ग का पार्टी से मोहभंग है। ये मध्यवर्ग मुख्य रूप से वेतन भोगी है। मोदी सरकार द्वारा इस बाद बजट में इनकम टैक्स में छूट सीमा बढ़ाने और आठवें वेतन आयोग के गठन ने मध्य वर्ग को वापस भाजपा की तरफ मोड़ दिया। इसी तरह निम्न वर्ग और महिलाओं ने भी आप के बजाए बीजेपी को ज्यादा वोट किया।

सवाल यह कि आप की दिल्ली विस चुनाव में भारी हार का राजनीतिक संदेश क्या है? आप की पराजय ने विपक्षी इंडिया गठबंधन पर एक और घनाघात किया है। ऐसे में यह गठबंधन कितना चल पाएगा, कहना मुश्किल है। अगर विपक्ष एक नहीं हो पाता है और राज्यों के चुनावों में वो हो भी नहीं रहा है, यह सत्तारूढ़ भाजपा के लिए सुखद खबर है। दिल्ली की हार का सीधा और पहला असर पंजाब की राजनीति पर होगा। वहां आप की सरकार है। संभव है कि कांग्रेस छोड़कर आप में गए कई नेता अपनी मूल पार्टी में लौटने लगें, क्योंकि अब केजरीवाल जीत की गारंटी नहीं रह गए हैं। आप की हार क्षेत्रीय दलों की राजनीतिक आकांक्षाओं पर भी बड़ा वज्रपात है। क्योंकि भाजपा दिल्ली में ही नहीं जीती है, उत्तर प्रदेश में बहुचर्चित मिलकीपुर विधानसभा सीट का उपचुनाव भी उसने जीत लिया है, जो समाजवादी पार्टी के लिए तगड़ा झटका है। इस चुनाव ने साबित कर दिया है कि संविधान बचाने, जाति जनगणना और ईवीएम में गड़बड़ी जैसे मुद्दे जो लोकसभा चुनाव में चल गए थे, अब संजीवनी शक्ति खो चुके हैं। विपक्ष को भाजपा से मुकाबले के लिए नए और असरदार मुद्दों की तलाश करनी होगी। क्योंकि भाजपा की जीत के मूल में उसकी सुस्पष्ट रणनीति, मुद्दों की पकड़, प्रभावी बूथ मैनेजमेंट और संकल्पशक्ति है। दिलचस्प बात यह है कि अरविंद का अर्थ भी कमल होता है और भाजपा का चुनाव चिन्ह भी कमल ही है। यानी दिल्ली में फिर कमल ने ही कमल को हरा दिया है। फर्क इतना है कि भाजपा आप को 'आपदा' साबित करने में कामयाब हो गई जबकि आप को बेनकाब नहीं कर पाई। दिल्ली विजय के साथ भाजपा का उत्तर भारत में राजनीतिक अश्वमेध काफी हद तक पूरा हो चुका है। जहां तक कांग्रेस का सवाल है तो उसे अभी भी अपनी सियासी जमीन और उन मुद्दों की तलाश है जो उसे खोया हुआ राजनीतिक वैभव लौटा सके। लोकसभा चुनाव की पिच पर मिली सफलता का सिलसिला पार्टी राज्यों के विकेट पर जारी नहीं रख पाई है। प्रमुख विपक्षी पार्टी के रूप में उसे क्या और कैसी भूमिका निभानी है, इसको लेकर भ्रम कायम है। क्योंकि दिल्ली में चुनाव के चलते महाराष्ट्र में मतदाता सूची में गड़बड़ी का मुद्दा उछालना राजनीतिक विवेक का परिचायक कतई नहीं कहा जा सकता।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 09 फरवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

अयोध्या हार का बदला , बीजेपी ने सपा से मिल्कीपुर छीना

61 हजार वोट की सबसे बड़ी जीत

अयोध्या (एजेंसी)। मिल्कीपुर उपचुनाव में भाजपा ने अयोध्या हार का बदला लिया है। 8 साल बाद मिल्कीपुर को छीन लिया है। भाजपा प्रत्याशी चंद्रभानु पासवान ने सपा प्रत्याशी अजीत प्रसाद को 61540 हजार वोटों से हराया। यह इस सीट के चुनावी इतिहास में सबसे बड़ी जीत है। चंद्रभानु पासवान को 146141, जबकि अजीत प्रसाद को 84601 वोट मिले। चौंकाने वाली बात यह है कि सपा प्रत्याशी अपने ही बूथ से हार गए। आज वह और उनके सांसद पिता अवधेश प्रसाद घर से नहीं निकले। घर पर ही

बातचीत में अवधेश प्रसाद ने कहा– भाजपा ने बेईमानी का रिकॉर्ड तोड़ दिया। उनके गुंडों ने बूथ कैप्चरिंग की। अखिलेश यादव ने बड़ा आरोप लगाया। कहा– ये झूठी जीत है। जिसका जश्न भाजपाई आंखों–में–आंखें डालकर नहीं मना पाएंगे। जिन अफसरों ने घपलेबाजी की, वो सजा पाएंगे। न कुदरत उन्हें बख्शेगी, न कानून।

मां महबूबा के साथ मुझे भी नजरबंद किया

इल्तिजा मुफ्ती बोलीं-चुनाव के बाद भी कुछ नहीं बदला

श्रीनगर (एजेंसी)। पीडीपी नेता और पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती की बेटी ने दावा किया है कि उनकी मां को कई घंटों के लिए नजरबंद कर दिया गया। एक सोशल मीडिया पोस्ट में इल्तिजा मुफ्ती ने कहा कि महबूबा मुफ्ती आर्मी की फायरिंग में मारे गए ट्रक ड्राइवर के परिवार से मिलने जाना चाहती थीं। उन्होंने कहा, मुझे और मेरी मां दोनों को घर में नजरबंद कर दिया गया। हमारे गेट लॉक कर दिए गए। हम सोपोर के वसीम मीर के परिवार से मिलना चाहते थे। इसके अलावा कठुआ में माखन दीन के परिवार से भी मिलने की कोशिश थी। हमें घर से बहार ही नहीं निकलने दिया गया। उन्होंने

कहा, कश्मीर में चुनाव के बाद भी कुछ नहीं बदला है। अब पीड़ितों के परिवार को भी अपराधी बताया जा रहा है। इल्तिजा ने एक्स पर एक तस्वीर भी शेयर की। महबूबा मुफ्ती ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा था कि पेरोडी के माखन दीन को बिलावर के एसएचओ ने ओवर ग्राउंड वर्कर होने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया और उसको जमकर पीटा। जबरन कबूलनामा करवाने के लिए उसे इतना मारा गया कि पुलिस कस्टडी में ही मौत हो गई। उन्होंने कहा, इंटरनेट बंद कर दिया गया और पूरे इलाके को सील कर दिया गया। इल्तिजा ने भी कहा था, कश्मीर में कई जगहों से लड़कों को उठा लिया जाता है। क्या वे सभी आतंकवादी हैं। सबको ही शक की नजर से देखा जाता है।

यूक्रेन के 26 ट्रिलियन डॉलर के दुर्लभ खजाने को हड़पने की रेस!

डोनाल्ड ट्रंप ने जेलेंस्की को दिया ऑफर

वॉशिंगटन/कीव (एजेंसी)। यूक्रेन के खिलाफ रूस का जंग इस महीने चौथे साल में प्रवेश करने वाला है। 3 सालों तक चली इस लड़ाई में रूस ने यूक्रेन की जमीन में मौजूद करीब 26 ट्रिलियन डॉलर के दुर्लभ खनिज संपदा के 70 फीसदी हिस्से पर कब्जा कर लिया है। जिसने युद्ध के इस माहौल में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के हाथों में एक ब्रह्मास्त्र दे दिया है। ऐसे में डोनाल्ड ट्रंप यूक्रेन के दुर्लभ खजाने को सुरक्षित करने के लिए एक ऐसे समझौते पर जोर दे रहे हैं, ताकि कीव को रूस के खिलाफ अपनी लड़ाई को आगे बढ़ाने के लिए लगातार अमेरिकी मदद मिलती रहे। यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमीर जेलेंस्की ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के प्रस्ताव पर सकारात्मक प्रक्रिया दी है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने यूक्रेन को दी जाने वाली 300

अरब डॉलर की मदद का हवाला देते हुए 'समानता' की जरूरत पर जोर दिया है। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि यूक्रेन के पास दुर्लभ खनिज संपदा है और हम एक ऐसा सौदा करने की कोशिश कर रहे हैं, जिसमें यूक्रेन को वह सब मिले जो हम उन्हें उनके दुर्लभ पृथ्वी और अन्य चीजों के साथ दे रहे हैं।

एसडीएम ने कांग्रेस विधायक के घर में घुसकर की मारपीट, मां को धक्का दिया, भाई की कॉलर पकड़ी

ग्रामीणों ने घेरा तो हाथ जोड़कर माफी मांगी

मंडला (नप्र)। मंडला में एक ट्रेनी आईएएस अफसर पर कांग्रेस विधायक के घर में घुसकर मारपीट करने के आरोप लगे हैं। बताया जा रहा है कि अधिकारी ने विधायक की मां को धक्का भी दिया। इस घटना के बाद गांव के लोग भड़क गए और अधिकारी का विरोध किया। जिसके बाद उन्होंने सब के सामने इस घटना के लिए हाथ जोड़कर माफी मांगी है। मामला शनिवार को जिले के घुघरी थाना क्षेत्र के खम्तरा गांव का है। बिछिया से कांग्रेस विधायक नारायण सिंह पट्टा ने आरोप लगाया है कि एसडीएम अकिप खान उनके घर में अनधिकृत रूप से घुसे और उनके भाई की जेसीबी के ड्राइवर के साथ मारपीट की।

विधायक की मां को दिया धक्का, भाई की पकड़ी कॉलर– एसडीएम खान जब ड्राइवर के साथ मारपीट कर रहे थे, तभी विधायक की बुजुर्ग मां बीच-बचाव करने आईं। आरोप है कि इस दौरान एसडीएम ने उन्हें धक्का देकर गिरा दिया। जब विधायक के भाई राजा पट्टा मौके पर पहुंचे तो एसडीएम ने उनकी भी कॉलर पकड़ ली।

एसडीएम को मांगनी पड़ी सार्वजनिक माफी

मारपीट की इस घटना की खबर फैलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर इकट्ठा हो गए। ग्रामीणों ने एसडीएम और उनके स्टाफ को घेर लिया। हालात ऐसे हो गए कि पुलिस को बुलाना पड़ा। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए घुघरी थाने की टीआई पूजा बघेल पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचीं। उनके हस्तक्षेप के बाद स्थिति को नियंत्रित किया गया। मामले को शांत करने के लिए एसडीएम खान को सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी पड़ी। उन्होंने कहा कि कार्रवाई को लेकर गलतफहमी हो गई थी।

ड्राइवर ने दर्ज कराई एसडीएम की शिकायत

इधर, पीड़ित जेसीबी ड्राइवर अजीत धुर्वे ने घुघरी थाने में एसडीएम के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत में गाली-गलौज, मारपीट और धमकी देने के गंभीर आरोप लगाए गए हैं। पुलिस से कार्रवाई की मांग की गई है।

मप्र में आज सर्द हवाओं का अलर्ट

भोपाल, इंदौर, ग्वालियर में पारा 5 डिग्री लुढ़का फरवरी में पहली बार तेज ठंड

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में सर्दी बढ़ गई है। पूरा प्रदेश शीतलहर की चपेट में है। इससे दिन और रात के पारे में 5 डिग्री तक की गिरावट हुई है। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर और उज्जैन भी ठंडे हैं। शुक्रवार की तरह शनिवार को भी सर्द हवाओं से ठिठुरन बनी रही। रविवार से ठंड से थोड़ी राहत मिल सकती है।

फरवरी में ठंड ने फिर कमबैक किया है। पिछले 3 दिन से सर्दी पड़ रही है। इस वजह से रात का तापमान 10 और दिन में 25 डिग्री से नीचे आ गया है। पिछले 24 घंटे की बात करें तो राजगढ़, रायसेन, धार, शाजापुर, सीहोर, नीमच, मंदसौर, छतरपुर, उमरिया और शहडोल अधिक शीतलहर वाले जिले रहे।

वहीं, भोपाल, विदिशा, झाबुआ, आगर-मालवा, गुना, दतिया, श्योपुर, मुरैना, भिंड, टीकमगढ़, निवाड़ी, सतना, मेहर, मऊगंज, सिंगरौली, अनूपपुर में भी सर्द हवा चली। वहीं, रात में कल्याणपुर, राजगढ़, खजुराहो, नौगांव, टीकमगढ़, गुना, सतना, धार, पचमढ़ी और मंडला में पारा 10 डिग्री से नीचे आ गया। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, जबलपुर और ग्वालियर में भी न्यूनतम तापमान 10.2 से 12 डिग्री तक रहा।

मनीष शंकर को एडीजी रेल और गुप्ता को एक महीने बाद नई जिम्मेदारी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में शुक्रवार को आईपीएस सर्विस मीट शुरू होने के बीच मोहन यादव सरकार ने चार आईपीएस अफसरों के तबादले किए हैं। शुक्रवार देर रात जारी के तबादला आदेश ए साईं मनोहर एडीजी और ओएसडी मध्य प्रदेश भवन नई दिल्ली को भोपाल वापस बुलाया गया है। उन्हें अब एडीजी साइबर पुलिस पीएचक्यू की जिम्मेदारी सौंपी गई है।इसके अलावा एडीजी पुलिस मैनुअल पीएचक्यू मनीष शंकर शर्मा को एडीजी रेल पुलिस मुख्यालय पदस्थ किया है। एडीजी पुलिस मुख्यालय डीपी गुप्ता को एडीजी सामुदायिक पुलिसिंग, आरटीआई, लोक सेवा गारंटी, कोऑपरेटिव फ्रॉड और पुलिस मैनुअल की जिम्मेदारी सौंपी? गई है। तबादला आदेश में एडीजी सामुदायिक पुलिसिंग, आरटीआई और लोकसेवा गारंटी मीनाक्षी शर्मा को ओएसडी मध्य प्रदेश भवन नई दिल्ली पदस्थ किया है।

डीजीपी के खिलाफ जमानती वारंट जारी

नियुक्ति से जुड़े मामले में 6 फरवरी को कोर्ट में होना था उपस्थित

ग्वालियर । ग्वालियर में मध्यप्रदेश के डीजीपी (डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस) कैलाश मकवाना के खिलाफ कोर्ट ने 5000 का जमानती वारंट जारी किया है। दरअसल, एक नियुक्ति विवाद से जुड़े मामले में छह फरवरी को डीजीपी को हाईकोर्ट की ग्वालियर खंडपीठ में उपस्थित होना था।कोर्ट ने उन्हें अनिवार्य रूप से तलब किया था, लेकिन उनकी गैरमौजूदगी के चलते हाईकोर्ट की एकल पीठ ने उनके नाम जमानती वारंट जारी कर दिया।

यह है पूरा मामला–पुष्पेंद्र सिंह भदौरिया ने वर्ष 2012 में हाईकोर्ट में सब-इंस्पेक्टर पद पर नियुक्ति के लिए याचिका दायर की थी। इस पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने 6 जून 2014 को आदेश दिया कि एसएएफ में प्लाटून कमांडर पद पर नियुक्ति की तिथि से ही उन्हें सब-इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त किया जाए। साथ ही, इस आदेश का पालन 45 दिनों के भीतर करने का निर्देश दिया गया था। लेकिन पुलिस मुख्यालय ने आदेश का पालन नहीं किया।इस वजह से 2015 में अवमानना याचिका दायर की गई, जो तब से लंबित है। आदेश का पालन न होने पर कोर्ट ने नाराजगी जताई और 20 जनवरी को निर्देश दिया कि मध्यप्रदेश के डीजीपी 6 फरवरी को अदालत में पेश हों। बावजूद इसके, डीजीपी कोर्ट में उपस्थित नहीं हुए, जिसके चलते उनके खिलाफ ?5000 का जमानती वारंट जारी किया गया।

27 फरवरी को कोर्ट में होना होगा पेश–इस मामले में मध्यप्रदेश के डीजीपी को 27 फरवरी को अदालत में पेश होना अनिवार्य होगा। यदि वे निर्धारित तिथि पर उपस्थित नहीं होते हैं, तो कोर्ट और सख्त रुख अपना सकता है। संभावना है कि, फरवरी के अंतिम सप्ताह में होने वाली सुनवाई के दौरान डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस कैलाश मकवाना अदालत में उपस्थित हो सकते हैं।

महाकाल मंदिर में 17 फरवरी से बदलेगा पूजन का समय

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन के विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में शिवनवरात्रि के अवसर पर पूजन व्यवस्था में बदलाव किया जा रहा है। 17 फरवरी से प्रारंभ हो रहे नौ दिवसीय शिवनवरात्रि पर्व के दौरान भोग आरती का समय सुबह 10.30 बजे से बदलकर दोपहर 1 बजे कर दिया गया है। साथ ही संध्या पूजन भी शाम 5 बजे की बजाय दोपहर 3 बजे होगा।

दिल्ली के विकास में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे, यह मेरी गारंटी है

दिल्ली चुनाव में भाजपा की शानदार जीत पर बोले पीएम मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को मिली शानदार जीत के लिए बधाई दी है। साथ ही उन्होंने दिल्ली की जनता को धन्यवाद दिया है। पीएम मोदी ने कहा कि दिल्ली में विकास जीता है।

सुशासन की जीत हुई है। उन्होंने यह भी कहा कि दिल्ली के विकास के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे। आपको बता दें कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी की करारी हार हुई थी। विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान पीएम मोदी ने आप के शासन की तुलान आपदा से की थी। प्रधानमंत्री मोदी लिखते हैं,जनशक्ति सर्वोपरि! विकास जीता, सुशासन जीता। दिल्ली के अपने सभी भाई-बहनों को भाजपा को ऐतिहासिक जीत दिलाने के लिए मेरा वंदन और अभिनंदन! आपने जो भरपूर आशीर्वाद और स्नेह दिया है, उसके लिए आप सभी का हृदय से बहुत-बहुत आभार।

दिल्ली आप-दा से मुक्त हुई, हम जीत का कर्ज विकास से चुकाएंगे

दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद पीएम मोदी ने भाजपा हेडक्वॉर्टर में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत यमुना मैया की जय के नारे के साथ की। उन्होंने कहा– आज दिल्ली में दिल्ली के लोगों में एक उत्साह भी है और सुकून भी है। उत्साह विजय का है, सुकून दिल्ली को आप–दा से मुक्त कराने का है। आपने दिल खोलकर प्यार दिया। मैं दिल्लीवालों को नमन करता हूं। मोदी ने कहा कि आपके इस प्यार को विकास के लॉन्ग रूट पर हम लौटाएंगे। दिल्ली के लोगों का ये प्यार ये विश्वास हम सभी पर एक कर्ज है। दिल्ली की डबल इंजन सरकार दिल्ली का डबल तेजी से विकास करके ये कर्ज चुकाएगी। इससे पहले नड्डा ने पीएम मोदी का स्वागत किया।

हार के बाद केजरीवाल ने कहा

आम आदमी का हर फैसला स्वीकार, शानदार चुनाव लड़े

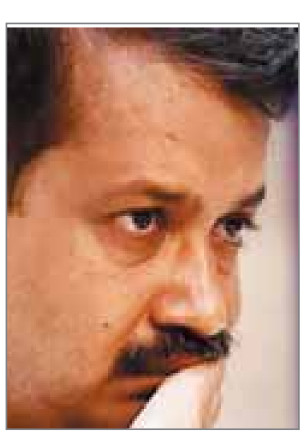

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी की हार के बाद पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल पहली बार कैमरे पर आए और जनता के जनादेश को स्वीकार किया है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हम विनम्रता से जनता के जनादेश को स्वीकारते हैं। उन्होंने कहा कि जनता का निर्णय सर माथे पर है। मैं भारतीय जनता पार्टी को इस जीत के लिए बहुत बहुत बधाई देता हूं। मैं उम्मीद करता हूं, दिल्ली की जनता ने जिस उम्मीद और आशा के साथ उन्हें बहुमत दिया है, वो उन सभी उम्मीदों और आशाओं पर खरा उतरेंगे। पूर्व सीएम ने आगे कहा कि दिल्ली की जनता ने हमें पिछले 10 साल में जो मौका दिया उसमें बहुत सारे काम किए। खासकर शिक्षा, स्वास्थ्य, पानी, बिजली समेत अन्य क्षेत्रों में काम किए। अलग अलग तरीके से लोगों की जिंदगी में राहत पहुंचाने की कोशिश की। इसके अलावा दिल्ली के इंफ्रास्ट्रक्चर को भी सुधारने की कोशिश की। अब जनता ने हमें जो रोल दिया है, उसमें हम सकारात्मक विपक्ष की भूमिका निभाएंगे। इसके अलावा समाज सेवा, जनता के सुख दुख में काम आना, जनता को व्यक्तिगत तौर पर मदद करना जारी रखेंगे।

सचिवालय से कोई भी कंप्यूटर हार्डवेयर, दस्तावेज बाहर न जाए

दिल्ली चुनाव परिणाम के बीच जीएडी ने जारी कर दिया नोटिस

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव परिणाम के बीच दिल्ली सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग ने एक नोटिस जारी किया है। जिसमें अभिलेखों की सुरक्षा को लेकर चिंता जताई गई है। नोटिस में कहा गया है कि जीएडी की अनुमति के बिना कोई भी फाइल/दस्तावेज, कंप्यूटर हार्डवेयर आदि दिल्ली सचिवालय परिसर से बाहर न ले जाए।

इसलिए यह निर्देश दिया जाता है कि दिल्ली सचिवालय में स्थित विभागों/कार्यालयों के अंतर्गत संबंधित शाखा प्रभारियों को उनके अनुभाग/शाखाओं के अंतर्गत अभिलेखों, फाइलों, दस्तावेजों, इलेक्ट्रॉनिक फाइलों आदि की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक निर्देश जारी किए जाएं। बता दें, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में विधानसभा चुनाव के नतीजे साफ हो गए हैं। पिछले 10 वर्षों से दिल्ली की सत्ता पर काबिज आम आदमी पार्टी को बड़ी हार का सामना करना पड़ा है, वहीं भारतीय जनता पार्टी की बीते दो दशक बाद दिल्ली की सत्ता में वापसी हो गई है। दिल्ली सरकार के जीएडी ने एक नोटिस जारी किया है, जिसमें सरकारी दस्तावेजों और डाटा की सुरक्षा का फैसला लिया है।

दिल्ली की जीत से बिहार में भी बदलेगा समीकरण!

पटना (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में बीजेपी की शानदार वापसी हुई है। 27 साल बाद बीजेपी दिल्ली की सत्ता में लौट आई है। इस जीत से बीजेपी के सहयोगी दल खुश हैं, लेकिन कुछ दलों में मिलीजुली प्रतिक्रिया है। जीतन राम मांझी की हम पार्टी को दिल्ली चुनाव में कोई सीट नहीं मिली थी, लेकिन वो बीजेपी की जीत से खुश हैं। वहीं जेडीयू और लोजपा (रामविलास) अपनी सीट हार गए हैं। यह चुनाव 5 फरवरी को हुआ था और 8 फरवरी को नतीजे आए। केजरीवाल और सिसोदिया अपनी सीट हार गए, जबकि आतिशी ने आम आदमी पार्टी की लाज बचाई। केंद्रीय मंत्री और लोक जनशक्ति पार्टी–रामविलास के प्रमुख चिराग पासवान ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में एनडीए की जीत पर खुशी जताई है। उन्होंने कहा– 'देवली की सीट पर लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) को मिले जनादेश का मैं सम्मान करता हूं और अपार जन समर्थन के लिए दिल्ली की जनता का आभार है।'

बांग्लादेशी घुसपैठियों पर बीएसएफ का बड़ा ऐक्शन

भारत-बांग्लादेश सीमा पर 10 गिरफ्तार, मदद में लिप्त भारतीय भी पकड़ाए

कोलकाता (एजेंसी)। सीमा सुरक्षा बल ने शुक्रवार को भारत-बांग्लादेश सीमा क्षेत्र में घुसपैठियों के खिलाफ बड़ा अभियान चलाया है। इस दौरान पश्चिम बंगाल के नदिया और मुर्शिदाबाद जिले में बीएसएफ ने बांग्लादेश के सात घुसपैठियों को गिरफ्तार कर लिया है। इस दौरान अधिकारियों ने उनके तीन भारतीय मददगारों को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने शुक्रवार को दस अपराधियों के गिरफ्तार होने की पुष्टि की है। अधिकारियों ने बताया है कि बीएसएफ ने 6 फरवरी को गश्ती दल ने सात घुसपैठियों को बांग्लादेश की सीमा पार करने की कोशिश करते देखा जिसके बाद सुबह पांच बजे अभियान शुरू किया गया। अधिकारियों ने बताया कि अभियान के दौरान 16 मोबाइल फोन, एक मोटरसाइकिल, बांग्लादेशी टका, केन्या और

इंडोनेशिया की विदेशी करेंसी भी जब्त की गई है। अधिकारियों के मुताबिक दो घुसपैठियों को मौके पर से गिरफ्तार कर लिया गया। वहीं पांच अन्य भारतीय क्षेत्र में भागने में सफल रहे। इसके बाद खुफिया जानकारी के आधार पर व्यापक तलाशी अभियान शुरू किया गया। अभियान के दौरान कथित तौर पर अवैध रूप से सीमा पार कराने में मदद करने वाले तीन भारतीय को भी गिरफ्तार किया गया। अधिकारियों ने बताया कि पकड़े गए दलालों से पूछताछ के दौरान सुबह भागे बांग्लादेश के पांच नागरिकों के बारे में जानकारी मिली। इस जानकारी की मदद से पुलिस उन पांचों तक पहुंची। जांच से खुलासा हुआ कि यह भारतीय घुसपैठियों की मदद कर रहे थे। ये अवैध रूप से सीमा पार कराने के लिए हर व्यक्ति से सात हजार रुपये को वसूली भी रहे थे।

प्रधानमंत्री मोदी विद्यार्थियों से करेंगे परीक्षा पे चर्चा

प्रदेश के सभी हाई और हायर सेकण्डरी स्कूलों में कार्यक्रम का होगा सीधा प्रसारण

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्?द्र मोदी 10 फरवरी को देश के विद्यार्थियों के साथ परीक्षा पे चर्चा करेंगे। उल्?लेखनीय है कि प्रधानमंत्री हर वर्ष से परीक्षा के तनाव को दूर करने के लिए विद्यार्थियों से संवाद करते हैं। इस वर्ष यह कार्यक्रम सोमवार 10 फरवरी को प्रात~11 बजे से नई दिल्?ली में आयोजित किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण संचार माध्?यमों पर किया जायेगा। कार्यक्रम का दूरदर्शन, डीडी नेशनल, डीडी न्यूज, डीडी इंडिया एवं ऑल इंडिया रेडियो के सभी चैनल, पीएमओ वेबसाइट , यूट्यूब, एमओई, फेसबुक लाइव, स्वयंप्रभा चैनल एमओई, दीक्षा चैनल एमओई से भी प्रसारण होगा। कार्यकम का प्रसारण अन्य निजी चैनल भी करेगें। कार्यक्रम में विद्यार्थी एवं शिक्षक तथा अभिभावक उक्त लिंक के माध्यम से सहभागिता कर सकेंगे।

स्कूल शिक्षा मंत्री कार्यक्रम में होंगे शामिल

स्?कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, सचिव स्?कूल शिक्षा डॉ. संजय गोयल और स्कूल शिक्षा विभाग में अन्?य वरिष्?ट अधिकारी राजधानी भोपाल के सुभाष उत्?कृष्?ट विद्यालय से विद्यार्थियों के साथ कार्यक्रम में सहभागिता करेंगे। आयुक्?त लोक शिक्षण श्रीमती शिल्?पा गुप्?ता ने बताया कि प्रदेश में भी राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद और सभी जिला शैक्षिक प्रशिक्षण संस्थानों में हाई और हायर सेकेण्डरी स्?कूलों में विद्यार्थियों की लाइव प्रसारण में सहभागिता होगी। स्?कूलों में टीवी प्रसारण के अलावा, इंटरनेट एक्सेस डिवाइस (कंप्यूटर लैपटॉप / मोबाइल इत्यादि) पर भी कार्यक्रम देखने की सुविधा दी जा रही है। प्रदेश के दूरदराज के क्षेत्रों में जहां टीवी देखने की व्यवस्था संभव नहीं होगी वहां रेडियो/ट्रांजिस्टर की व्यवस्था किये जाने के लिये कहा गया है। समस्?त ज़िला कलेक्?टर्स एवं मैदानी अधिकारियों को परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम के लाइव प्रसारण में विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षकों की सामूहिक रूप से सहभागिता सुनिश्चित करने के लिये कहां गया है।

भोपाल में भैया कचरा गिरोह के 3 सटोरिए अरेस्ट

घर से अवैध सट्टे का चला रहे थे कारोबार

भोपाल (नप्र)। भोपाल के टीला जमालपुरा इलाके में 'भैया कचरा गिरोह' के दो सटोरी घर से सट्टे का अवैध कारोबार चला रहे थे। पिनपॉइंट सूचना के आधार पर क्राइम ब्रांच की टीम ने घर में दबिश दी और दोनों सटोरियों को हिरासत में ले लिया। पूरी कार्रवाई का वीडियो भी सामने आया है। आरोपियों के कब्जे से हजारों रुपए कैश, हिसाब-किताब के रजिस्टर और मोबाइल फोन जब्त किए गए हैं।

एडिशनल डीसीपी क्राइम शैलेंद्र सिंह चौहान ने बताया कि, सटोरियों की पहचान जुबैर खान, असगर अंसारी और शाहवाज खान के रूप में हुई। मुखबिर की सूचना के बाद, पुलिस ने इस कार्रवाई को अंजाम दिया। मौके से 22 हजार रुपए सहित अन्य समाग्री जब्त की गई है। इसमें और कितने लोगों की भूमिका है। इसका पता लगाया जा रहा है। गिरोह के सरगना भैया कचरा की भी तलाश की जा रही है।

आदतन अपराधी हैं बदमाश- गिरफ्तार आरोपी जुबैर खान टीला जमालपुरा थाने का निगरानी बदमाश है। उसके दोनों साथियों पर भी कई अपराध दर्ज हैं। इनका सरगना हरीजन बस्ती टीला जमालपुरा में रहने वाला भैया उर्फ कचरा है। जिसके खिलाफ मारपीट, अड़ीबाजी और जुआ सट्टा के कई अपराध दर्ज हैं।

महिला तस्कर भी गिरफ्तार- एक अन्य मामले में शहर में गांजा खपाने की तैयारी में आई महिला तस्कर को क्राइम ब्रांच ने गिरफ्तार किया है। महिला तस्कर पान मसाला के थैले में गांजा छिपाकर लाई थी। उसके कब्जे से 6 किलो 300 ग्राम गांजा बरामद किया गया है। इसकी कीमत 1.30 लाख रुपए बताई जा रही है। क्राइम ब्रांच ने उसे एमपी नगर स्थित एक्सिस बैंक के सामने से गिरफ्तार किया। महिला तस्कर की पहचान किरण कुशवाह के रूप में हुई, जो गोविंदपुरा की रहने वाली है।

आईईएस यूनिवर्सिटी में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

साइबर सुरक्षा और एआई पर विशेषज्ञों ने की चर्चा, 500 छात्र शामिल

भोपाल (नप्र)। आईईएस यूनिवर्सिटी और आईईएस कॉलेज लो टेक्नोलॉजी के कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग ने स्प्रिंगर के सहयोग से दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन यूएनआई-टीईएस 2025 का आयोजन किया। यह सम्मेलन यूनिवर्सल थ्रेट्स इन एक्सपर्ट एप्लिकेशंस एंड सोल्यूशंस विषय पर केंद्रित था।

सम्मेलन का उद्घाटन एनआईटीटीटीआर भोपाल के निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी और आईईएस यूनिवर्सिटी के चांसलर इंजीनियर बीएस यादव की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर थाईलैंड, इटली और फिलीपींस से आए अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों ने भी अपनी सहभागिता दी।

प्रो. त्रिपाठी ने डेटा साइंस और साइबर सुरक्षा पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। इटली से आई प्रो. फ्रांसेस्का डि वर्जिलियो ने एआई कोलैबोरेशन पर प्रकाश डाला, जबकि फिलीपींस के डॉ. डैनियल डी. दासिग जूनियर ने क्लाउड कंप्यूटिंग की नवीनतम तकनीकों से छात्रों को अवगत कराया।कार्यक्रम में देश के विभिन्न शहरों से आए उद्योग विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और प्रोफेसरों ने अपने विचार साझा किए। इंजीनियरिंग, डिप्लोमा, एमसीए और बीसीए के 500 से अधिक छात्रों ने सम्मेलन में भाग लिया। समापन पर आईईएस यूनिवर्सिटी के सीईओ देवांश सिंह ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया और उन्हें स्मृति चिह्न भेंट किए।

मप्र में भी दिल्ली की जीत का जश्न

आप और कांग्रेस की असलियत जनता जान गई, इनके फैलाए कीचड़ में कमल खिला: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत पर मध्य प्रदेश के सीएम डॉ. मोहन यादव ने बधाई दी है। उन्होंने एक्स पर लिखा- दिल्ली आ-पदा से मुक्त हो गई है। सीएम ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और सभी कार्यकर्ताओं को बधाई दी है।

दिल्ली विधानसभा चुनाव के परिणाम सामने आने के बाद सीएम यादव ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा है- आ-पदा से मुक्त हुआ दिल्ली। प्रयागराज जाने से पहले उन्होंने भाजपा नेताओं को मिठाई खिलाई। सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आप-दा और कांग्रेस की असलियत को जनता जान गई है। आज उनके फैलाये कीचड़ में भी कमल खिला है।

जीत पर सभी को बधाई- दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की शानदार जीत के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित सभी कार्यकर्ताओं और साथियों को बधाई। उन्होंने कहा कि दिल्ली में भाजपा को केंद्र की तरह जनता का समर्थन मिला है। पीएम नरेन्द्र मोदी का देश की जनता के साथ जुड़ाव है। टुकड़े-टुकड़े गैंग में शामिल लोगों की हार हो रही है और अब देश एक दिशा में जा रहा है।

भाजपा नेताओं में खुशी का माहौल- दिल्ली विधानसभा चुनाव मतगणना में भाजपा को लगातार मिलती बढ़त के बाद मध्य प्रदेश के भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं में खुशी का माहौल है। भोपाल, इंदौर सहित कई शहरों में भाजपा कार्यकर्ता जश्न मनाकर एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दे रहे हैं।

दिल्ली विस चुनाव में भाजपा की शानदार जीत पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वी.डी.शर्मा , विधायक भगवान दास सेनानी को मिठाई खिलाते हुए।

दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत पर मध्यप्रदेश में भी जश्न मना। भोपाल स्थित प्रदेश भाजपा कार्यालय में पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे को मिठाई खिलाई और बधाई दी। कार्यकर्ता ढोल की थाप पर थिरकते नजर आए। इंदौर में सीएम डॉ. मोहन यादव ने भी कार्यकर्ताओं को मिठाई खिलाई। दिल्ली में भाजपा की जीत पर प्रतिक्रिया देते हुए सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि भाजपा के साथ ही पीएम मोदी का जनता के साथ जुड़ाव, बीजेपी कार्यकर्ताओं की मेहनत और देश का बदलता हुआ मिजाज सब एक दिशा में जा रहे हैं। टुकड़े-टुकड़े गैंग अपनी ओछी मानसिकता से देश और प्रदेश को वर्षों से गुमराह करती आई है। ऐसे सारे तत्वों की लगातार हार हो रही है।

सीएम ने इंदौर में कहा कि बीजेपी लगातार हरियाणा, महाराष्ट्र और दिल्ली के बाद के चुनाव भी केंद्र की तरह ही जीत रही है। एक विखंडतावाद फैलाया था, सबको गुमराह करने के लिए। यह सबक है सबको, कि वह अपने अंदर झांक कर देखें।

दिल्ली को आपदा की स्थिति में ले जाने वाले खुद आपदा में चले गए- बीडी शर्मा- दिल्ली चुनाव में कई बड़े नेताओं की हार पर प्रतिक्रिया देते हुए प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा- उन्हें तो हराया ही जाना था, क्योंकि यही लोग दिल्ली को आपदा की स्थिति में लेकर गए थे, और अब वे खुद आपदा में चले गए हैं। कांग्रेस लगातार गिरावट की ओर बढ़ रही है। दिल्ली चुनाव में मध्यप्रदेश के नेताओं की भूमिका पर बोलते हुए वीडी शर्मा ने कहा कि हम भाजपा के कार्यकर्ता हैं और जहां भी हमें जिम्मेदारी दी जाती है, उसे पूरी शिद्दत के साथ निभाते हैं।

दिल्ली से आप-दा की विदाई हो गई- सिंधिया- ग्वालियर आए केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने दिल्ली में भाजपा की जीत पर कहा कि दिल्ली में आप-दा सरकार की विदाई कर दी गई है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भाजपा को दिल्ली में स्थापित किया। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में वहां का विकास सुनिश्चित होगा। डबल इंजन की सरकार ने एक-एक प्रदेश में विकास और प्रगति की नई गाथा और नया कीर्तिमान स्थापित किया है। उसी की शुरुआत अब दिल्ली में होगी।

धार के दामाद हैं केजरीवाल को हराने वाले प्रवेश वर्मा

दिल्ली के पूर्व सीएम और आप नेता अरविंद केजरीवाल को 3,000 वोट हराने वाले भाजपा नेता प्रवेश वर्मा धार के दामाद हैं। उनकी जीत ने स्थानीय भाजपा कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह भर दिया। कार्यकर्ताओं ने जमकर आतिशबाजी की और मिठाई बांटकर एक दूसरे को बधाई दी।प्रवेश वर्मा पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता विक्रम वर्मा व धार विधायक नीना वर्मा के दामाद हैं। चुनाव प्रचार के दौरान विक्रम वर्मा और नीना वर्मा सहित कई समर्थक दिल्ली में सक्रिय रहे। प्रवेश वर्मा की इस ऐतिहासिक जीत के बाद बदनावर समेत पूरे धार जिले में भाजपा कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर है। विधायक नीना वर्मा के आवास पर भी जश्न मनाया गया।

सास के लिए धार आए थे प्रवेश वर्मा

बता दें कि नीना वर्मा की बड़ी बेटी स्वाति वर्मा से प्रवेश वर्मा की शादी हुई है। वरिष्ठ नेता विक्रम वर्मा अटल बिहारी सरकार में केंद्रीय मंत्री रह चुके हैं, तब प्रवेश वर्मा के पिता साहिब सिंह वर्मा दिल्ली के सीएम थे। उनका जन्म 7 नवंबर 1977 को दिल्ली में हुआ है। वर्ष 2002 में प्रवेश व स्वाति की शादी हुई। उनके तीन बच्चे, बेटा शिवेन और बेटी सानिधि और प्रिशा हैं।

2023 के मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में सास नीना वर्मा के प्रचार के लिए प्रवेश वर्मा खुद धार आए थे। लगातार चौथी मर्तबा धार में नीना को जीत मिली थी। प्रवेश के साथ उनकी पत्नी स्वाति ने धार विधानसभा के गांवों में बैठक लेने और पार्टी के लिए वोट मांगने पहुंची थीं। चुनाव के अलावा भी प्रवेश धार आते रहते हैं, इसी कारण स्थानीय नेताओं से भी प्रवेश वर्मा का सीधा संपर्क है।

महाराष्ट्र, हरियाणा के बाद अब दिल्ली में खिला कमल

सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि महाराष्ट्र और हरियाणा के बाद अब दिल्ली में भी भाजपा ने जीत दर्ज की है। देशभर के लोगों की निगाहें देश की राजधानी दिल्ली के चुनाव पर है। चुनाव के रुझानों में यहां कांटे की टक्कर बताई गई थी।

सांस्कृतिक विरासत और जनजातीय धरोहर के बीच विशाल आकार लेगा औद्योगिक

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि 24-25 फरवरी को पहली बार राजधानी भोपाल में आयोजित हो रही ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट केवल निवेश और व्यापार के अवसरों का मंच ही नहीं, बल्कि यह आयोजन मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक और औद्योगिक क्षमता को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने का एक ऐतिहासिक अवसर है। इस समिट का राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में आयोजन इसका महत्व एवं प्रभाव को और अधिक बढ़ाता है। जीआईएस का आयोजन स्थल भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और जनजातीय परंपराओं का जीवंत उदाहरण है। जब दुनिया भर के उद्योगपति, नीति-निर्माता और निवेशक इस आयोजन का हिस्सा बनेंगे, तो वे मध्यप्रदेश की औद्योगिक संभावनाओं के साथ यहां की सांस्कृतिक आत्मा को भी महसूस कर सकेंगे।

निवेशकों के लिये सजीव उदाहरण बनेगा मानव संग्रहालय

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश एक ऐसा राज्य है, जहां विकास की संभावनाएं और पारंपरिक धरोहर समान रूप से फल-फूल रही हैं। पहली बार भोपाल में हो रही ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट इस बात का प्रमाण है कि मध्यपप्रदेश निवेशकों के लिए एक नए केंद्र के रूप में उभर रहा है। राष्ट्रीय मानव संग्रहालय इस सोच का सजीव उदाहरण है कि कैसे मध्यप्रदेश अपनी सांस्कृतिक जड़ों को संरक्षित रखते हुए औद्योगिक प्रगति की ओर बढ़ रहा है।

औद्योगिक निवेश के सांस्कृतिक और पर्यटन में खुलेंगे नये अवसर

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोपाल में आयोजित यह समिट मध्यप्रदेश को वैश्विक निवेश मानचित्र पर और अधिक मजबूती से स्थापित करेगी। यह आयोजन न केवल औद्योगिक निवेश को गति देगा, बल्कि सांस्कृतिक और पर्यटन क्षेत्रों में भी नए अवसर खोलेगा, जिससे मध्यप्रदेश का बहुआयामी विकास सुनिश्चित होगा। इस ऐतिहासिक आयोजन से प्रदेश की वैश्विक पहचान और अधिक सशक्त होगी, जिससे न केवल उद्योग बल्कि सांस्कृतिक और रचनात्मक क्षेत्रों में भी नए अवसर सृजित होंगे।

पर्यटन और हस्तशिल्प में भी निवेश को प्राथमिकता

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश अपनी सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक निवेश के साथ जोड़कर एक नया मॉडल प्रस्तुत कर रहा है। इस समिट के दौरान निवेशकों को न केवल प्रदेश की औद्योगिक नीति और अधोसंरचना विकास की जानकारी मिलेगी, बल्कि वे देखेंगे कि किस प्रकार मध्यप्रदेश अपनी पारंपरिक संपदा को आर्थिक संभावनाओं से जोड़ रहा है। वैश्विक निवेशक अब केवल उद्योगों में ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पर्यटन और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में भी निवेश के लिए मध्यप्रदेश को प्राथमिकता दे रहे हैं।

निवेशक कर सकेंगे ऐतिहासिक परंपराओं का अनुभव

भोपाल में हो रही ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट को राष्ट्रीय मानव संग्रहालय जैसे विशेष स्थल पर आयोजित करना यह दर्शाता है कि मध्यप्रदेश केवल उद्योगों और व्यापार के लिए नहीं, बल्कि सांस्कृतिक नवाचार और पर्यटन के लिए भी वैश्विक आकर्षण का केंद्र बन चुका है। यह आयोजन निवेशकों को न केवल नए व्यापारिक अवसरों से परिचित कराएगा, बल्कि उन्हें प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपराओं का अनुभव भी कराएगा। सतत विकास के साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरणमुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जब निवेशक राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के परिवेश में इस आयोजन का हिस्सा बनेंगे, तो वे देखेंगे कि किस तरह प्रदेश ने अपनी ऐतिहासिक धरोहर को जीवंत रखा है .

राजधानी में ग्लोबल इनवेस्टर्स समिट की तैयारियां जोर शोर से जारी है।

दिल्ली में फिर भाजपा की सरकार

विवेक तन्खा ने चुनाव आयोग पर जताई नाराजगी, इन्वेस्टर मीट पर कसा तंज

जबलपुर (नप्र)। दिल्ली में एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी सरकार बनाती दिख रही है। कांग्रेस की स्थिति यहां भी कमजोर बनी हुई है। राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा ने भी स्वीकार किया कि दिल्ली अब भाजपा की हो गई है। हालांकि, चुनावी नतीजों पर अंतिम टिप्पणी देने को लेकर उन्होंने कहा कि अभी यह जल्दबाजी होगी।

दिल्ली चुनाव पर विवेक तन्खा की प्रतिक्रिया- जबलपुर में मीडिया से बातचीत के दौरान विवेक तन्खा ने कहा कि दिल्ली में त्रिकोणीय मुकाबला था। किसका कितना वोट शेयर रहा है, यह अंतिम परिणाम के बाद ही स्पष्ट होगा। उन्होंने कहा कि जनता ही तय करती है कि किसे चुनना है और किसे नहीं।

छत्तीसगढ़ निकाय चुनाव पर बोले– कांग्रेस की स्थिति मजबूत

छत्तीसगढ़ में होने वाले निकाय चुनाव को लेकर तन्खा ने कहा कि कांग्रेस की स्थिति वहां मजबूत है। 2018 में जब स्थानीय निकाय चुनाव हुए थे, तब हाईकोर्ट ने उन पर रोक लगा दी थी। इसके बाद भूपेश बघेल और टी.एस. सिंहदेव ने दिल्ली आकर मुझसे मुलाकात की थी, जिसके बाद हमने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के स्टे को खारिज कर दिया, जिसके बाद चुनाव हुए और कांग्रेस ने प्रचंड बहुमत से जीत दर्ज की।

इन्वेस्टर मीट को लेकर सरकार पर निशाना

इन्वेस्टर मीट पर प्रतिक्रिया देते हुए विवेक तन्खा ने कहा कि वे इसके विरोधी नहीं हैं, बल्कि चाहते हैं कि मध्यप्रदेश का विकास हो। उन्होंने कहा,जो भी काम करें, उसे गंभीरता से लें, न कि सिर्फ एक इवेंट बनाकर छोड़ दें। इन्वेस्टर मीट के नाम पर केवल शो बाजी, भाषण और प्रस्तुतियां होती हैं।

उन्होंने भाजपा सरकार पर सवाल उठाते हुए कहा, महाकौशल में भी इन्वेस्टर मीट हुई थी, लेकिन बताइए, कितने हजार करोड़ के एमओयू साइन हुए और कितना निवेश वास्तव में आया?

तन्खा ने सुझाव दिया कि सरकार को इन्वेस्टर मीट को केवल प्रचार का जरिया बनाने के बजाय गंभीर प्रयास करने चाहिए। उन्होंने कहा, इन्वेस्टर्स को बुलाकर उनके साथ व्यक्तिगत चर्चा कीजिए, सिंगल विंडो सिस्टम बनाइए और निवेश सुनिश्चित कीजिए। केवल इवेंट आयोजित करने से विकास नहीं होगा। पिछले 20 साल का रिकॉर्ड उठा कर देख लीजिए।

किले से कूदने से पहले 4 नंबरों पर की बात ,ग्वालियर में दो लोगों ने छात्रा के पिता को कॉल कर कहा था- बचा लो

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में किले से कूदकर जान देने वाली 9वीं की छात्रा ने आखिरी बार मोबाइल पर राज यादव नाम के लड़के से बात की थी। उनकी बातचीत करीब एक घंटे तक चली थी। इसके अलावा छात्रा ने तीन और नंबर पर बात की थी।

आनंद नगर शिवनगर में रहने वाली पुष्पा यादव 7 फरवरी गुरुवार शाम करीब 4 बजे कोचिंग जाने का कहकर घर से निकली थी। वह उरवाई गेट के रास्ते स्कूटी से सीधे किले पर पहुंची। किले की दीवार के पास स्कूटी पार्क की और जूते उतार कर दीवार पर चढ़कर छलांग लगा दी। सुसाइड से एक घंटे पहले छात्रा के पिता के पास दो नंबरों से कॉल आए थे, जिसमें बेटी को बचा लेने की बात कही थी। पुष्पा के घर से निकलने के बाद शाम 4.20 बजे पुष्पा के पिता को एक लड़की का कॉल आया। उसने कहा कि पुष्पा जान देने जा रही है। ठीक 10 मिनट बाद 4.30 बजे किसी राज यादव का कॉल आया, उसने भी पुष्पा को बचा लेने की बात कही। शुक्रवार को छात्रा का अंतिम संस्कार किया गया।

परिजन का आरोप- बेटी की हत्या की गई- इस पूरे मामले में एक नाम राज यादव का आ रहा है। जिसने पुष्पा के परिजन को कॉल कर उसके यह कदम उठाने की सूचना दी थी। पुलिस को पता लगा है कि राज यादव, छात्रा का दोस्त है। दोनों के बीच गहरी दोस्ती थी। वहीं पिता का आरोप है कि राज, बेटी को परेशान कर रहा था। तीन महीने पहले उसके घर पर समझाने भी गए थे। उसने ही बेटी की हत्या कर फेंका है।

पुलिस जांच में सामने आया है कि छात्रा ने सुसाइड से पहले सोशल मीडिया अकाउंट से प्रोफाइल फोटो हटा लिया था। पुलिस छात्रा का सोशल मीडिया अकाउंट भी खंगाल रही है।

टीआई पड़ाव आलोक परिहार ने कहा कि पुलिस छात्रा और परिजन के मोबाइल पर आए कॉल डिटेल से पूरे मामले को सुलझाने का प्रयास कर रही है।

दीवार पर चढ़ता देख लोग बचाने दौड़े- परिजन का कहना है कि पुष्पा जब घर से निकली थी तो किसी को उसने एहसास नहीं होने दिया कि वह क्या करने जा रही है। वह रोज की तरह घर से हंसती-मुस्कराती निकली थी।

पुष्पा को सास-बहू के मंदिर के पास किले पर ही दुकान चलाने वाले कुछ लोगों ने किले की दीवार पर चढ़ते देखा था। लोग आवाज लगाते हुए उसे बचाने के लिए दौड़े। वे पहुंचते इससे पहले ही उसने छलांग लगा दी।

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। छात्रा को बाहर निकालकर हॉस्पिटल पहुंचाया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। छात्रा के पिता रिंकू यादव मोतीझील पर एक पंप पर कर्मचारी हैं।

कहानी

विवेक रंजन श्रीवास्तव

बाबूजी

जमाना अमिताभ बच्चन की यंग एग्रीमेन वाली फिल्मों का था । उम्र को नजर अंदाज न किया जा सके तो बाबू जी हमारे मोहल्ले के ओल्ड एंग्रीमेन कहे जा सकते थे। किसी भी मुद्दे पर जमाने से भिड़ जाना उनके खून में था । बाबूजी यूं तो बायलाजीकली अपने तीन बेटों और दो बेटियों के बाबूजी ही थे , किन्तु अपने केरेक्टर के चलते वे मोहल्ले भर के बाबू जी के रूप में ऐसे स्थापित हुए की वे अपने नाती पोतों के भी बाबूजी ही बन गए ।

उस जमाने में मोहल्ला परिवार सा ही होता था। बाबू जी के सम्मुख पड़ोस की बहुएं भी उतना ही पर्दा करतीं थीं, जितना वे अपने जेठ या ससुर से करती । बाबूजी मोहल्ले के बच्चों की गलती पर भी उतना ही रौब दिखाते जितना खुद के बच्चों पर । उन दिनों जनसंख्या भी कम थी । जीविका के साधन कम थे । मनोरंजन के साधन के नाम पर तीज त्यौहार और शादियां ही थे । भोंपू वाले लाउड स्पीकर पर गाने बजाकर खुशी मनाई जाती थी। लोग समाचार पत्र , पत्रिकाएं पढ़ते थे रेडियो सुनते थे और टाकीज में सिनेमा देखने जाया करते थे ।

बाबूजी कोई छह फीट ऊंचे , मजबूत कद काठी, भारी आवाज वाले रौबदार शख्स थे । सफेद रंग की धोती , सफेद शर्ट और उस पर जैकेट पहन कर लाठी लेकर निकलते थे , पैरों में मोहल्ले के मोची द्वारा बनाई गई सेंडल होती थी । नई सेंडल शुरू के दिनों में पैरों की टुहनी के पास काट लेती थी जिसे मोम लगाकर , बाबूजी की लताड़ सुनते हुये मोची को ठीक करना होता था।

बाबू जी सुबह उठते। आकाशवाणी के स्टेशन खुलने की ट्यून के बाद वन्देमातरम के साथ वे खखारते हुए , छोटी पीतल की बाल्टी और लोटे से,पानी लेकर बगीचे में नीम की दातौन करते।थोड़ी वर्जिश और प्राणायाम करते,उसके बाद एक एक पेड़ को निहारते ,खुद क्यारी का कचरा साफ करते, और पौधों को पानी देते । इस दौरान जो भी सड़क से निकलता उससे बतियाते हुए , उन्हें देखा जा सकता था ।

उस जमाने में अधिकांश लोग सायकिल पर चला करते थे । किंचित धनाढ्य लोगों के पास वेस्पा स्कूटर होते। जिनके कोई नाते रिश्तेदार विदेशों में होते,वे डालर में भुगतान कर चेतक स्कूटर ले लेते थे पर बाबू जी के पास फियट कार थीं । वे शान से स्टीयरिंग से जुड़े गियर वाली अपनी फिएट में बैठकर दुकान जाते। दुकान पर दिन भर ग्राहकों से और एक्सचेंज के जरिए कनेक्ट होने वाले फोन पर सौदे की बातचीत होती । लाल कवर वाली बही ऊपर की ओर पलट कर खुलती थी। उसमें मुनीम जी से हिसाब किताब लिखवाना उनका शगल था। दीवार में जड़ी हुई बड़ी सी तिजोरी में बड़ा अलीगढ़ी ताला खुद लगा कर दुकान बढ़ाने से पहले वे उसे खींच कर देखते ।

गरीबों को यथाशक्ति मदद करना , दान धर्म करना उनके व्यवहार में था । दुकान पर चाबी वाली दीवार घड़ी के नीचे एक डब्बे में चिल्लर भरी होती , हर भीख मांगने आने वाले को एक सिक्का मिलता । बहुत से नर्मदा परकम्मा वासी अपनी आवश्यकता बताते तो उन्हे वांछित मदद बाबूजी जरूर करते । दुकान से घर आने के बाद हल्का भोजन करते और रेडियो सीलोन सुनकर सो जाते । यह उनकी नियमित दिनचर्या थी।

बाबू जी के बड़े दो बेटों और बेटियों की शादी हो चुकी थी। बेटियों के रिश्ते में जिन्होंने दहेज ठहराने की कोशिश की उनके यहां विवाह को वे न करने के साहसिक कदम उठा चुके थे । बेटों की शादियों में उन्होंने दहेज नहीं लिया । शादी के बाद बेटे अगल-बगल में ही रहते थे।तीसरे बेटे की शादी में उन्होंने खास मथुरा से हलवाई बुलवाए थे।उनका सोच था कि यह आखिरी मौका होगा जब इतने बड़े पैमाने पर उन्हें कस्बे के लोगों को न्यौता देने का अवसर है । हलवाई के पास भट्टी के निकट खुद बैठकर अपने निर्देशन में मिठाईयां बनवाना उनका शौक था । कस्बे के सभी हलवाई उनकी झिड़की समझते थे। मोहल्ले पड़ोस में जिसके यहां भी शादी हो या अन्य कोई त्यौहारी अवसर , हलवाई का जिम्मा वे आगे बढ़कर उठा लेते । डांट डपट , पुचकार के जरिए वे उम्दा पकवान बनवाते थे। यही मिलनसार व्यवहार उन्हें सबका बाबूजी बनाए हुए थी। बाबूजी अपने क्रांतिकारी स्वभाव के चलते मृत्यु भोज के सख्त विरोधी थे,वे दुख बांटते,दाह संस्कार में अवश्य शामिल होते पर कभी मृत्यु भोज में न जाते ।

छोटे बेटे की शादी के लम्बे अरसे बाद उस दिन एक बार फिर बाबूजी के घर के सामने तम्बू लगा था , हलवाई बैठा बूंदी छान रहा था,और दुखी मन से लड्डू बना रहा था, उसके हाथों शकर का बूरा ज्यादा गिर गया पर उसे झिड़कने वाले बाबूजी कहीं नहीं थे। मुनीम जी बाबू जी की बड़ी सी तस्वीर पर हार चढ़ा रहे थे । बाबूजी के अनायास हार्ट अटैक से सारा कस्बा ही हतप्रभ था। संवेदना व्यक्त करने सभी आए थे ।

घर में मत्यु भोज को लेकर एक मत नहीं बन पा रहा था, तब परिवार के पुरोहित की सलाह सबको मानना पड़ी । बाबू जी की चिर मुक्ति के लिए पंडितो ने तेरहवीं के पूजा पाठ पूरे विधि विधान से किए किंतु मृत्यु भोज न करने का फैसला लिया गया।

पत्तल में बाबूजी के नाम मिठाई निकाल कर गाय के सम्मुख रख दी गई । जाने कैसे हवा का तेज झोंका आया और मिठाई का दोना उड़ गया, लड्डू लुढ़क कर बाबू जी की तस्वीर के नीचे जा पहुंचा । बाबूजी की तस्वीर के पास जल रहे दीपक की शिखा तेजी से हिल रही थी । हवन का धुंआ वातावरण में घुल रहा था। धुंए में भी सबकी सजल आंखें स्पष्ट दिख रही थीं। भट्टी के पास बैठा हलवाई न चाहकर भी धार धार रो पड़ा था । चंदन की गंध दूर तक बाबू जी के क्रांतिकारी विचारों का संदेशा फैला रही थी।

(विनायक फीचर्स)

दो कविताएं

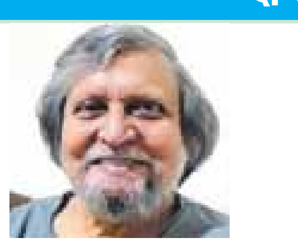

राजकुमार कुम्भज

मेरा प्रेम पटाखा

मेरा प्रेम पटाखा
कोई एक दिया सलाई
सुलगाती है मुझे
और मैं भावनाओं से भरा
सुलग जाता हूं
शायद सुलग ही जाता हूं
सुखी जंगली घास जैसे
मुझे सुलगाओ मत
मुझे धधकाओ भी मत
मुझे धमकाओ भी मत
मैं वही हूं जो मुझमें तुमकी तरह
मैं वही हूं जो तुममें मुझ की तरह
और ये वही है और शायद सही-सही भी
कि जो हमारी नींद में आता है पहले-पहल
किंतु जो फिर सीधे-सीधे हमारी
रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में चला ही आता है
लहराते हुए निज प्रेम-पताकाएं
प्रेम-पताकाएं सुलगाती हैं मुझे
सुलगाही रही हैं सदियों से ये वे प्रेम-
पताकाएं
जोकटी-फटी हैं , रंग हीन भी और बदरंगभी
इसी बीच तमाम जड़ताओं के रहते हुए जारी
मैं लौटता हूं बेरंग और रंगीहन भी
फिर-फिर आग
फिर-फिर पलाश
फिर-फिर हवन
और यहां-यहां तक कि हवन कुंड में
इच्छा अनिच्छा को रौंदते हुए आ रही
किसी एक सद्इच्छा के पालन में प्रेम-
पताकाएं तमाम
मेरा प्रेम पटाखा.

आख़िर वह क़त्ल क्या ?

वह जानता था मुझे
मैं ही था कि ज़रा भी नहीं जानता था उसे
उसने मुझे अपनी बंद कलाई घड़ी दिखाई
और बढ़ाकर अपना हाथ पूछा मुझसे
कि आखिर किसी भी तलाशी का
कि आख़िर किसी भी जासूसी का
कि आख़िर किसी भी शत्रुता का
जो न हो ख़ौफ़नाक और तकलीफ़ देह मंज़र
आख़िर वह क़त्ल क्या ?

फिर बसंत बहार छायी

अनुपमा अनुश्री

फ़िज़ाओं में आब नयी
इंद्रधनुषी रंगो के साथ
प्रकृति दुल्हन सी हरषायी।
...फिर बसंत बहार छायी।
सौंदर्य वैभव से खिल उठी प्रकृति
रसरंग , सुगंध,द्रव्य की नूतन सृष्टि
सुर्ख आँच में सिंकने लगे
डेजी, गुलमोहर, पलाश
पीली-पीली सरसों सरसाई।
... फिर बसंत बहार छायी।
खुल गए मन के फंद
कलम रचने लगी गीत स्वछन्द
गीत प्रकृतिस्थ होकर रमण करने लगा
भावों के समंदर में उतरने लगा
कविताओं ने प्रेरणा पायी।
.... फिर बसंत बहार छायी।
झूम उठा कण -कण
ओज से भर, प्रकृति के संग
गुनगुनाते पुष्पों की ओढ़नी ओढ़
नयी धुन छेड़ रहा मदन
ऋषि ,मुनि , गुनी जनों को भायी।
.... फिर बसंत बहार छायी।
अंग संग लहराई पुरवाई
फिर बसंत बहार छायी
बसंत राग , श्रृँगार और
फाग का संदेशा है लायी।
.....फिर बसंत बहार छायी।
झंकृत हो गए प्राण नव स्पंदन से
हवाओ में घुल गए कचनार

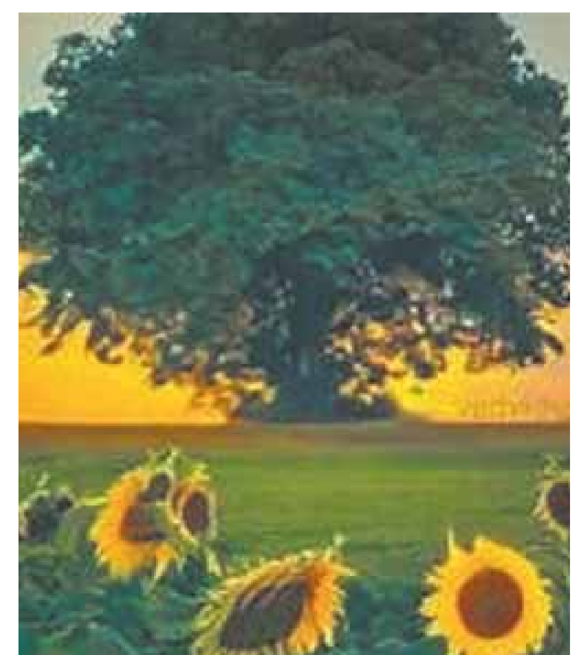

बसंत बहार

देखो फिर से वसंती हवा आ गई।
तान कोयल की कानों में यों छा गई।
कामिनी मिल खोजेंगे रंगीनियाँ।।
इस कदर डूबी क्यों बाहरी रंग में।
रंग फागुन का गहरा पिया संग मे।
हो छटा फागुनी और घटा
जुल्फ की,
है मिलन की तड़प मेरे अंग अंग में।
दामिनी कुछ कर देंगे नादानियाँ।।
कामिनी मिल खोजेंगे रंगीनियाँ।।
बन गया हूँ मैं चातक तेरी चाह में।
चुन लूँ काँटे पड़े जो तेरी राह में।
दूर हो तन भले मन तेरे पास है,
मन है व्याकुल मेरा तेरी परवाह में।
भामिनी हम न देंगे कुर्बानियाँ।।
कामिनी मिल खोजेंगे रंगीनियाँ।।
मैं भ्रमर बन सुमन पे मचलता रहा।
तेरी बाँहों में गिर गिर सँभलता रहा।
बिना प्रीतम के फागुन का क्या मोल है,
मेरा मन भी प्रतिपल बदलता रहा।
मानिनी हम फिर लिखेंगे कहानियाँ।
कामिनी मिल खोजेंगे रंगीनियाँ।।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पुस्तक समीक्षा- बस इतना बचा देना

अपने समय का भाष्य करती कविताएं

राजा दुबे
समीक्षक

चंद्रशेखर साकल्ये गद्य और पद्य में समान अधिकार के साथ लेखन करते हैं । अभी तक उनके तीन कविता संग्रह और एक कहानी संग्रह आ चुके है। उनका ताज़ा कविता संग्रह - ' बस इतना बता देना ' की कविताएं अपने समय का भाष्य तो करती ही है वे एक आम आदमी ज़िन्दगी में घट रहे कथ-अकथ पर पर भी प्रभावी टिप्पणी करती हैं। जब नई कविता और अंकिता के फार्म में कविता छन्द और उससे जुड़े अनुशासन से मुक्त हुई थी तब एक वरिष्ठ व्यंग्यकार ने सहास्य कहा था कि ऐसी कविताएं तो वे प्रतिदिन थोक में लिख सकता हूँ । मगर तब भी छंदमुक्त कविताओं से जुड़े जिन मेधावी कवियों ने उस कथन को अपनी प्रभावी कविताओं से झुठलाया उनमें चन्द्रशेखर साकल्ये भी एक थे ।

इस कविता संग्रह के लिये दो शब्द लिखते हुए वे कहते हैं मेरे पहले दो कविता संग्रहों में बीते समय और बिछड़े शहर की पीड़ा ने ही कविताओं में अभिव्यक्ति पाई थी । इस बार मैंने कुछ अलग करने के लिये अपने परिवेश और सीमा को विस्तार देते हुए नये विषयों को छुआ है । और इतने भिन्न-भिन्न विषय की कहीं कुछ छूटा हुआ नहीं लगता । जँगल और आदिवासी , आपके दो प्रिय विषय है ।इस संग्रह में भी अपनी कविता जँगल में आपने एक जँगल के बीच बनी सड़क से बिनी हुई लकड़ियों को लेकर गुजरती आदिवासी लड़की के एक बेकाबू वाहन से कुचलने की घटना पर अच्छा रुपक रचा है । जब वे लिखते हैं कि - 'उसे बाघ ने नहीं मारा,उसे भालू ने नहीं मारा , जँगल में उसे किसी ने नहीं मारा ' तब वे व्यवस्था की विसंगति की बखिया को जिस खूबी से उधेड़ते हैं वह उनके लेखन की मेधा को प्रकट करती है ।

इस संग्रह की शीर्षक कविता - ' बस इतना बचा देना में ' वे आम आदमी की सीमित जरुरतों के लिये कुछ भौतिक संसाधनों को बचाने की याचना करते हुए अंततः इस यथार्थ का बचाव करते हुए कहते हैं - ' शेष दुनिया तुम्हारी है , उसे लूटो और नष्ट कर दो ' ,यहाँ वे शोषकों की कुटिलता और उनकी मंशा को भी सामने लाते हैं । अपने बचपन के मित्र भजमन और अपनी दिनचर्या की तुल्यता को बखानती उनकी कविता - ' भजमन और मैं ' के चरम पर लिखी गई यह पंक्तियां कि - मैं सफल मनुष्य कहलाया , उसे मालूम ही नहीं था कि वो देवता था बड़े मार्मिक मगर यथार्थवादी पटाक्षेप को दर्शाता है।

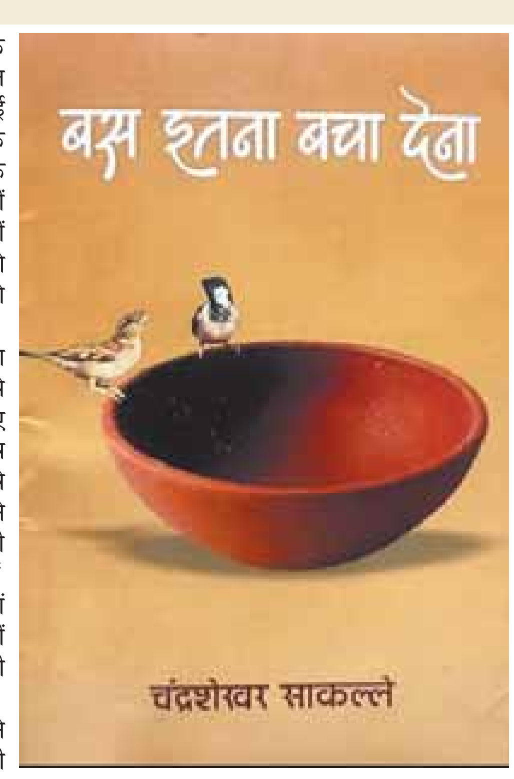

संग्रह की एक नहीं कई कविताओं में साकल्ये अपने समय के सच और सामाजिक सरोकारों को बड़े प्रभावी अन्दाज़ में प्रस्तुत करते हैं ।' जँगल -सी एक शाम में ' परिवार में एक दबंग पिता का रुपक हो या फिर- ' सार्वजनिक स्थान का एक दृष्य' में एक प्रताड़ना झेल रही विवश युवती वाला रुपक। पहले रुपक में आप एक निजी मामला कहकर असम्पृक्त होने की ओर इशारा करते हैं तो दूसरे रुपक में भी आप कुछ देर तक युवती के बारे में और उसको प्रतिरोध करना चाहिए था इस बारे में सोचते हैं फिर हमेशा की तरह उस युवती के बारे में सोचना बन्द कर देते हैं । कम शब्दों में गँभीर विषयों पर अपनी बात को पूरी शिद्दत और ताकत के साथ कहने की खूबी के कारण उनकी हर कविता कुछ संदेश देती लगती है। उनकी कविता को शिल्प की दृष्टि से एक असरदार कविता की संज्ञा दी जा सकती है । इस संग्रह में उन्होंने कई विषयों पर भी कविता लिखी हैं जो उनके विषय चयन की दक्षता को भी दर्शाती हैं। संग्रह में कुछ नये ढब की मगर पुराने मुहावरों से लदी हुई कविताएं भी हैं । ऐसी ही एक कविता है' नया प्रेत संसार ' जो मशीन और मानव के रिश्ते की नई ढब की कविता है जिसमें वामपंथी पुराने मुहावरे है जो सटीक तो हैं मगर एक विचारधारा का झण्डा फहराते लगते हैं ।

पुस्तक- बस इतना बचा देना (कविता संग्रह)
लेखक - चन्द्रशेखर साकल्ये
प्रकाशक - आईसेक्ट पब्लिकेशन , भोपाल
मूल्य- 200

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

मूर्तन तथा अमूर्तन के बीच झूलती कृतियाँ

हमारे आज की कला में खींची गई रेखायें, भरे गये रंग शायद ना पढ़ा जा सके कई सौ साल बाद या कृतियों को सर्वथा भिन्न तरीके से पढ़ा जाय, कृतियों के उस पक्ष को पढ़ा जाय जो पक्ष गढ़ा ही न गया हो। तमाम भ्रांतियाँ हमेशा रही हैं और हमेशा रहेंगी जितना संभव हो सकता है हल करने का प्रयास किया जाता है पर हल की हुई भ्रांति कितनी सच है? क्या हम उसके जड़ तक पहुँच भी पाते हैं? ये सारे प्रश्न अनुत्तरित ही रह जाते हैं। अमूर्त कृतियों पर जब हम या स्वयं कलाकार ही अपने विचार रखने लगता है दर्शक को उस कृति से जोड़ने का प्रयास करता है तो क्या वो उस कृति की पूरी व्याख्या कर पाता है? क्या कुछ प्रतिशत भी कर पाता है? क्या उसके बाद उससे आगे उसमें व्याख्या की गुंजाइश नहीं रह जाती? क्या दर्शक उस कृति से उसी तरीके से जैसा कि कलाकार समझाना चाहता है जुड़ पाता है या कि वो उस कृति को अपने नजरिए से देखने में ज्यादा संतुष्ट हो पाता है? क्या दर्शक का संतुष्ट हो जाना ही कृति की सार्थकता है? क्या उसके आगे और कुछ काम शेष नहीं रह जाता एक कृति का।

अमूर्त जैसे शब्द को समय और काल में नहीं बाँधा जा सकता क्योंकि जो मेरे लिए अबूझ पहेली है, किसी और के लिए बायें हाथ का खेल हो सकता है, कोई तीसरा उसी पहेली के साथ उठता बैठता खेलता रहा होगा। जिसका जीता जागता उदाहरण स्तम्भों पर खुदे लिपियों तथा गुफाओं में खिंची आड़ी-तिरछी रेखाएं हैं। जो अभी तक रहस्य बनी हुई हैं जहाँ हमारा आपका ज्ञान, हमारी आपकी भाषा सब धरी की धरी रह गई है, बौने पड़ गये हैं हम। हमारे आज की कला में खींची गई रेखायें, भरे गये रंग शायद ना पढ़ा जा सके कई सौ साल बाद या कृतियों को सर्वथा भिन्न तरीके से पढ़ा जाय, कृतियों के उस पक्ष को पढ़ा जाय जो पक्ष गढ़ा ही न गया हो। तमाम भ्रांतियाँ हमेशा रही हैं और हमेशा रहेंगी जितना संभव हो सकता है हल करने का प्रयास किया जाता है पर हल की हुई भ्रांति कितनी सच है? क्या हम उसके जड़ तक पहुँच भी पाते हैं? ये सारे प्रश्न अनुत्तरित ही रह जाते हैं। अमूर्त कृतियों पर जब हम या स्वयं कलाकार ही अपने विचार रखने लगता है दर्शक को उस कृति से जोड़ने का प्रयास करता है तो क्या वो उस कृति की पूरी व्याख्या कर पाता है? क्या कुछ प्रतिशत भी कर पाता है? क्या उसके बाद उससे आगे उसमें व्याख्या की गुंजाइश नहीं रह जाती? क्या दर्शक उस कृति से उसी तरीके से जैसा कि कलाकार समझाना चाहता है जुड़ पाता है या कि वो उस कृति को अपने नजरिए से देखने में ज्यादा संतुष्ट हो पाता है? क्या दर्शक का संतुष्ट हो जाना ही कृति की सार्थकता है? क्या उसके आगे और कुछ काम शेष नहीं रह जाता एक कृति का। कहा जाता है कि स्वतंत्रता के आस-पास वाले समय में ही कला भी स्वतंत्र हुई है और वहीं से अमूर्तता की शुरुआत भी मानी जा सकती है पर गौर करने वाली बात ये है कि हम आधुनिक भारतीय अमूर्त कला पर चर्चा नहीं कर रहे अपितु भारतीय चित्रकला में अमूर्तन पर चर्चा कर रहे हैं अतः समय सीमा से परे चलकर बात करनी होगी। कला साहित्य या ऐसी हर विधाओं में एक बात आम रही है कि जो समय और समाज से तारतम्य बिठाकर सृजन करता है उसके कृतियों पर चर्चा

होती है, लोग-बाग वहाँ तक पहुँचना चाहते हैं या जिस किसी सर्जक पर अचानक से किसी समीक्षक की निगाह पड़ जाती है उसकी कलाकृतियों से भी दर्शक जल्दी ही रूबरू हो जाते हैं, वहीं जो कलाकार इन सभी से इतर समाज के बंधनों से बिलग सिर्फ सृजन करते जाता है या जिसे लोग-बाग आसानी से नहीं समझ पाते उसे जब तक समझा जाता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है यहाँ तक कि कई वाद बीत चुके होते हैं। रही बात अमूर्त कृति और उसके कलाकार की तो समय सभी के साथ न्याय करता है। कृति में यदि कालजयी होने के गुण हैं तो देर से ही सही उसे कालजयी होने से कोई भी रोक नहीं सकता वहीं यदि वो विशेषता रहित है और झूठे ही बड़े-बड़े अलंकरणों से उसे शोभायमान किया जा रहा है तो भी वो ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकता रही बात कृतियों के विशेषता पर गौर करने की, कि कौन और कैसे उसके मापदंड को तय कर सकता है? क्या मापने वाला उस योग्य है भी या नहीं? तो इन सभी का उत्तर या मापदंड समय तय करता है। एक कृति एक समय मूल्य विहीन होती है वही कृति किसी और समय अनमोल हो जाती है।

बादलों का उमड़-घुमड़ कर घिरना, पल-पल रंग बदलना एवं नये-नये रूपों में खुद को बदलते रहना क्या वहाँ अमूर्तन नहीं है? क्या बचपन में या पचपन में हम घिर-घिर आये बदरा के रूप को देखकर मोहित नहीं होते? क्या उनके पल-पल बदलते रंग और रूप के साथ अनजाने ही सही मुंह खोल के अपलक निहारते नहीं रहते? कोई भी वस्तु जिसे हम पहली बार देख रहे होते हैं हमारे लिए अमूर्त ही होता है, अलग बात है औरों के लिए वो मूर्त है। अमूर्त के समझ के बाद ही मूर्त की समझ विकसित होती है। बच्चा जब पहली-पहली बार चीजों को समझने का प्रयास करता है अमूर्तन से मूर्तन की तरफ ही बढ़ता है। अमूर्तन है तभी मूर्तन की समझ है, अमूर्तन है तभी रंग और रेखाओं का महत्व है, अमूर्तन है तभी नये सृजन की गुंजाइश है।

आज भारतीय कला में जो भी संकेत, चिन्ह, रूप-रंग प्रयोग में लाये जाते हैं और मूर्त रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं वो भी तो कभी अमूर्त ही रहे होंगे, किसी विशेष वस्तु को प्रस्तुत करने हेतु तैयार लोगो क्या सीधे ही मूर्त हो गया होगा? क्या उस पर कलाकार लगातार कई-कई बार काम नहीं किया होगा, दो-चार ले-आउट तैयार नहीं किया होगा? कोई विशेष लोगो जब प्रयोग हेतु मान्य कर लिया जाता है तो वो मूर्त हो जाता है उसके साथ कथा और व्याख्या जुड़ जाते हैं तो क्या बाकी अमूर्त ही रह जायेंगे या उसमें से ही कोई दूसरा मान्य हो जाता तो ये लोगो जो पहले ही मान्य हो चुका है अमूर्त की श्रेणी में नहीं आ जाता। मूर्तन तथा अमूर्तन को लेकर तमाम भ्रांतियाँ हैं जो हमेशा ही बनी रहेगी। भारतीय कला या वैश्विक कला हमेशा से ही मूर्तन तथा अमूर्तन के बीच ही पली-बढ़ी है इससे इनकार नहीं किया जा सकता और ना ही इस बात से इनकार किया जा सकता कि आने वाले समय में भी इससे बचा जा सकता है। जिस भांति सुख-दुख, दिन-रात एक दूसरे के बिना अधूरे और अस्तित्वहीन हैं वैसे ही अमूर्तन के बिना मूर्तन या मूर्तन के बिना अमूर्तन का कोई अस्तित्व नहीं है। हम जैसे लोग अपने विचार संप्रेषित करते रहेंगे जो कुछ समय हेतु मान्य तो हो जायेंगे पर हमेशा के लिए मान्य होंगे संदेह है। समय के साथ वस्तुओं एवं विषय-वस्तुओं की परिभाषाएं बदलती रहती है और बदलते रहते हैं मानदंड।

हम थोड़ा पहले चलते हैं तो पाते हैं कि राजा रवि वर्मा जितने भी कृतियों का निर्माण करते हैं अधिकतर धार्मिक ग्रंथों पर आधारित है बात आती है कि जब तक कलाकार द्वारा किसी प्रतिनिधि रूप का अंकन नहीं कर दिया जाता तब तक तो वो कृति अमूर्त ही रहती है?। रवि वर्मा के बारे में जानकारी है कि पहली बार देवी एवं देवताओं को उन्होंने ही चित्रों में ढाला था तो क्या ये मान लेना चाहिए कि जिस भी रूप में उन्होंने देवी एवं देवताओं को चित्रित किया क्या वही रूप उनका वास्तविक था? नहीं। हम दर्शकों को मूर्तरूप को पूजने एवं जल्दी से समझ जाने की आदत है फलतः हम उससे अपने आप को जल्द ही जोड़ लेते हैं। एक ही देवी को चार कलाकार चार चेहरे में चित्रित करते हैं तो क्या देवी का चेहरा चार रहा होगा? हीनयान, महायान जैसे चित्रण में भी मूर्तन तथा अमूर्तन को अच्छे से समझा जा सकता है, अमूर्तन धीरे-धीरे मूर्तन की तरफ बढ़ता रहा, भव्यता प्राप्त करता रहा और हीनयान महायान में बदलता रहा। अमूर्त कृति में भी दर्शक कोई न कोई रूप ढूंढ़ ही लेता है तभी उससे जुड़ाव महसूस कर पाता है अतः अमूर्तन एवं मूर्तन दोनों के अस्तित्व को स्वीकारना ही होगा।

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

यूं ही तो गर्दिश में नहीं आते सितारे !

आम तौर पर बता सकते हैं कि किसी फिल्म के लिए पुरस्कारों का मौसम कब अच्छा चल रहा है, क्योंकि इसके सितारे हर जगह हैं, समारोहों में भाग ले रहे हैं, लाल कालीन बिछा रहे हैं, जितना हो सके उतने इंटरव्यू कर रहे हैं और वही बातें दोहरा रहे हैं कि यह फिल्म कितनी खास है और हर किसी के साथ काम करना सपना था। इसके ठीक उलट बता सकते हैं कि चीजें इतनी अच्छी नहीं हैं, जब हीरो ही सभी अमेरिकी कार्यक्रमों को रद्द कर रहा हो, अभियान से चुपचाप बाहर कर दिया जा रहा हो और ऐसे बयान जारी कर रहा हो- 'मैंने उन लोगों के लिए गहरा खेद व्यक्त किया है जिन्हें मैंने दुःख पहुंचाया है।'

यहीं पर फिल्म 'एमिलिया पेरेज' और इसकी खास कार्ला सोफिया गस्कॉन खुद को पाते हैं। दो हफ्ते से भी कम समय पहले 'एमिलिया पेरेज' ऑस्कर के लिए सबसे आगे थी, जिसमें गस्कॉन का नाम भी शामिल था। इस साल किसी भी फिल्म के लिए सबसे ज्यादा नॉमिनेशन इस फिल्म को मिले हैं। लग रहा है जैसे 'एमिलिया पेरेज' के पुरस्कार अभियान के लिए,या कम से कम खुद गस्कॉन के रास्ते बंद हो गए हैं। इतनी जल्दी कैसे हो गया, आखिर ऐसी क्या हुआ जो सितारे गर्दिश में आ गए। जब गस्कॉन ने पिछली मई के कान में अव्वल पुरस्कार जीता था तो ऐसा करने वाली पहली ट्रांसजेंडर थीं। उन्होंने आंसुओं के साथ यह पुरस्कार ट्रांस बिरादरी को समर्पित किया और कहा आशा के संदेश के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहती हूं, हम सभी के पास बेहतरी के लिए बदलने, बेहतर इंसान बनने का अवसर है।

बाद में पता चला है कि गस्कॉन खुद भी ऑनलाइन नफरत फैला रही हैं। स्पेनिश अभिनेता के एक्स/ट्विटर पोस्ट की जांच से मुसलमानों (इस्लाम मानवता के लिए महामारी बन रहा है);, पुलिस की बर्बरता के शिकार जॉर्ज फ्लॉयड (ड्रग एडिक्ट ठग), चीन (चीनी वैक्सीन चिप के अलावा दो स्प्रिंग रोल के साथ आती है) और यहां तक कि ऑस्कर के बारे में भी कहा गया। पुरस्कारों (2021) पर पर कहा कि जहां नोमेंसलैंड, मिनारी, जुडास एंड द ब्लैक मसीहा और मा रेनी के

ब्लैक बॉटम शामिल थे, गस्कॉन ने लिखा- ज्यादा से ज्यादा ऑस्कर स्वतंत्र और विरोध फिल्मों के लिए समारोह की तरह दिख रहे हैं। मुझे नहीं पता था कि अफ्रीकी-कोरियाई उत्सव देख रहा था।

एमिलिया पेरेज के निर्देशक, जैक्स ऑडियार्ड ने कार्ला सोफिया गस्कॉन का जवाब दिया है और उन्हें नफरत करार दिया है। जैक्स ने कहा- 'मेरे लिए कार्ला सोफिया के साथ किए काम के बारे में सोचना मुश्किल है। हमने भरोसा किया और जब भरोसे का रिश्ता होता है और अचानक कुछ ऐसा पढ़ते हैं जो नफरत के लायक हैं, तो यकीनी तौर से रिश्ते पर

असर होता है। यह ऐसा है मानो किसी गड्ढे में गिर गए हों, क्योंकि कार्ला सोफिया ने जो कहा वह माफ करने लायक नहीं है। कार्ला सोफिया गस्कॉन का मामला सब बदल देगा, लेकिन केवल तब तक, जब तक प्लेटें फिर से इधर-उधर न हो जाएं। सही मायने में चीजें हाथ से बाहर हो गई हैं और बदसूरत भी। बदसूरत वही है जो आप फिल्मों से नहीं चाहते हैं। ऐसे जुल्म से कोई विजेता नहीं होता है।'

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

आम आदमी की हैसियत पर औसत फिल्म है - 'हिसाब बराबर'

सुप्रसिद्ध कार्टूनिस्ट आर के लक्ष्मण के कार्टून्स के केन्द्र में हमेशा एक - कॉमन मैन (आम आदमी) होता था और लक्ष्मण कुछ रेखाओं के जरिये उस आम आदमी से कुछ खास की निर्मिति को अंज़ाम देते थे । लेखक-निर्देशक अश्विनी धीर की इस फिल्म की कहानी भी एक आदमी की ही कहानी है ।आम आदमी की शख्सियत के बारे में कहा जाता है कि उसकी अपनी कोई खास अहमियत नहीं होती है मगर यदि वह अपनी अड़ी पर? आ जाये तो वह पूरी व्यवस्था को हिला सकता है । इस फिल्म की कहानी भी कमोबेश ऐसी ही है । रेलवे में टिकट जाँचने वाले एक कर्मचारी को गणित की पहेलियां हल करने का शौक है। खाली समय में वह सीए की कोचिंग भी करता है। एक दिन उसे समझ आता है कि उसके खाते से 27 रुपये गायब हैं। वह बैंक जाता है। शिकायत करता है। बैंक वाले उसे ये शिकायत करने के इनाम में एक टेलीविजन गिफ्ट कर देते हैं। और, लोग भी शिकायतें लेकर जाते हैं, बैंक उन्हें भी गिफ्ट दे देती है। टीटीई का माथा ठनकता है। वह हिसाब लगाता है बैंक के चार करोड़ ग्राहकों का, जिनके खाते से अगर ये थोड़ी थोड़ी रकम 'चुरा' ली जाए तो घोटाला कितना बड़ा हो सकता है ?

लेखक-निर्देशक अश्वनी धीर ने अपनी इस फिल्म की कहानी तो अच्छी चुनी है । फिल्म का ताना-बाना बुनने के लिये संसाधन भी अच्छे जुटाएं है मगर

कहानी पहले अध्याय में ही अटक जाती है फिल्म के केन्द्रीय चरित्र की जो समस्या फिल्म शुरू होने के पहले पन्द्रह मिनट में ही समझ आ जाती है, उसे सुलझाने में कहानी के नायक की शूरवीरता को संस्थापित करने के लिए अश्वनी धीर के पास आगे की कहानी नहीं है या कहें कि दमदार कहानी नहीं है। ये एक शॉर्ट फिल्म लायक कहानी है जिस पर अश्वनी ने कोई ढाई घण्टे से ज्यादा की फिल्म बनाकर जियो स्टूडियो को सौंप दी है। जियो स्टूडियोज़ भी बेहद शातिर साबित हुए और उन्होंने अपने पाले की गेंद धीरे से अपने ऐप जियो सिनेमा को थमा दी ।चौबीस साल पहले टीवी सीरियल 'ऑफिस ऑफिस ' लिखकर लेखक अश्विनी धीर सुर्खियों में आये थे ।जब पहली बार फिल्म 'वन टू थ्री ' में निर्देशक बने तो लोगों को पता ही नहीं चला। लेकिन, फिल्म ' अतिथि तुम कब जाओगे ' ने बड़े परदे पर उनको स्थापित किया ।उसके बाद अश्विनी ने ' सन ऑफ सरदार 'और ' गेस्ट इन लंदन ' बनाई और अब आई है ' हिसाब बराबर '। छोटे परदे के दबंग लेखक, निर्देशक, निर्माता रहे अश्विनी धीर ने 'चिड़िया घर'और उसके पहले 'लापता गंज'ने में छोटे परदे के दर्शकों को खूब हँसाया था ।बड़े परदे पर मगर उनकी यह औसत प्रस्तुति है ।

फिल्म की कहानी शुरू होती है एक रेल्वे के एक टिकटचेकर राधेमोहन (आर माधवन) के साथ जो ईमानदार तो है ही, लेकिन उससे भी ज्यादा हिसाब-किताब का पक्का भी है ।वह न तो किसी से एक पैसे की बेईमानी करता है और न ही किसी और के साथ ऐसा होते देख सकता है । कहानी में ट्विस्ट तब आता है जब उसके बैंक अकाउण्ट में गड़बड़ी मिलती है ।शक होने पर वह ऐसे और भी मामले ढूँढता है और फिर सामने आता है हजारों करोड़ रुपये का बैंक स्कैम । राधेमोहन इस बैंक स्कैम का पर्दाफाश करने की कोशिश जैसे ही शुरू करता है, उसकी जिंदगी में भूचाल आना शुरू हो जाता है ।फिल्म में आम आदमी और सिस्टम के इसी संघर्ष को दिखाया गया है ? फिल्म का सरप्राइज एलीमेंट कीर्ति कुल्हारी हैं और नकारात्मक भूमिका में नील नितिन मुकेश हैं ।

अभिनय पक्ष का जहाँ तक सवाल है फिल्म के हीरो माधवन ने पूरी कोशिश की है कि वो अपना सौ फीसदी परफार्मेंस दें ।अभिनेता वह कमाल के हैं ही इसमें कोई शक नहीं। पहले 'डिकपल्ड' फिर 'द रेलवे मेन 'और अब 'हिसाब बराबर' । ओटीटी पर माधवन की टक्कर इन दिनों मनोज बाजपेयी की लोकप्रियता से की जा रही है। यहाँ माधवन इसलिए इक्कीस नजर आते हैं क्योंकि उनके पास तमिल का एक बड़ा दर्शक वर्ग अतिरिक्त रूप से भी है। एक आम आदमी की भूमिका को आर माधवन ने पर्दे पर बखूबी उतारा है । रेलवे मेन और शैतान फिल्म से माधवन ने जो अभिनय का पैमाना तय किया है राधेमोहन से उसे एक बार फिर जस्टिफाई कर दिया है ।नील नितिन मुकेश ने लम्बे समय बाद परदे पर वापसी की है, उनका किरदार नेगेटिव शेड है, काफी हद तक वह इसे निभा ले गए हैं, पर उनसे और बेहतर की उम्मीद की जाती है ।कीर्ति कुल्हारी ने एक बार फिर खुद को साबित किया है. रश्मि देसाई की कॉमिक टाइमिंग ठीक ठाक है ।

अगर आप एक्शन-मारधाड़ फिल्मों को पसन्द करते हैं तो फिल्म से आपको निराशा हाथ लग सकती है। संस्पेंस-थ्रिलर जैसी चीजें भी आपको इसमें नहीं दिखेंगी। हाँ फिल्म देखने के बाद आप ये सोचने के लिए जरूर मजबूर होंगे कि आपके खाते में हर तीन माह में बैंक जो ब्याज जोड़ रहा है, वह सही है या नही।

बैंक स्कैम-सिस्टम के गठजोड़ से जूझते आम आदमी की कहानी है यह फिल्म।आर माधवन और अश्विनी धीर की जोड़ी फिल्म ÷ हिसाब बराबर ÷से बैंकों का वो चेहरा दिखा रही है, जिसमें आम आदमी लुट रहा है । एक्शन-मारधाड़ और बायोपिक फिल्मों के दौर में फिल्म का सब्जेक्ट आम आदमी को ध्यान में रखकर चुना गया है जोआपको अच्छा लग सकता है ।

फसलों को फायदा, सर्द हवाओं के कारण बढ़ी ठिठुरन

ठंड का पलटवार , 4 डिग्री गिरकर 26 पर आया तापमान

बैतूल। उत्तर भारत में हुई बर्फबारी का असर जिले में भी दिखाई दे रहा है। सर्द हवाओं के कारण जिले का रात का तापमान घटकर 13.2 डिग्री पर पहुंच गया है। आलम यह रहा कि सर्द हवाओं के कारण करीब 15 दिनों के बाद अधिकतम तापमान 27 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। इससे कुछ दिन से गायब हो चुकी ठंड फिर लौट आई। वहीं सुबह हल्की ठंड का भी एहसास देखने को मिला। मौसम विभाग के अनुसार फरवरी का पारा 24 से 27 डिग्री के बीच रहता है, लेकिन इस बार जनवरी के अंतिम सप्ताह और फरवरी के शुरुआती दिनों में मार्च जैसी गर्मी पडने़ से पारा 32 डिग्री तक पहुंच गया था। गुरूवार को पश्चिमी विक्षोभ के असर के कारण उत्तर भारत की ओर से सर्द हवाओं का दौर शुरू हुआ, जो रात तक जारी रहा। इस कारण लोगों को ठंड का अहसास हुआ। इससे दिन का पारा 4 डिग्री लुढ़ककर 27 डिग्री पर पहुंच गया, जो कि शनिवार को भी यथावत रहा। वहीं रात के तापमान में हल्की गिरावट आई है। शुक्रवार रात का पारा 13.2 डिग्री रिकॉर्ड हुआ है।हालांकि शनिवार रात का पारा और नीचे जा सकता है।

फसलों को पकने में होगी आसानी- उप संचालक कृषि आनंद बडोनिया ने बताया कि जनवरी का अंतिम सप्ताह से लेकर फरवरी के अंतिम सप्ताह के बीच अच्छी ठंड रहती है। लेकिन इस साल जनवरी के अंतिम सप्ताह में तापमान 32 डिग्री तक पहुंच गया था। इससे फसलों को नुकसान की संभावना थी, लेकिन उत्तर भारत में हुई बर्फबारी के कारण ठंड का फिर से पलटवार हुआ है। इसका फायदा गेहूं-चना फसल को मिलेगा। जिन किसानों ने लेट बुआई का कार्य किया है, उन फसलों को ठंड के कारण फायदा होगा। दोनों ही फसलों में दाने अच्छे से बैठेंगे, जिससे उत्पादन बढने़ के आसार हैं। किसान रामप्रसाद, चरणदास का कहना है कि वर्तमान समय में फसल फूल व फल पर है। ऐसे में सामान्य ठंड जरूरी है, लेकिन पिछले 10 दिनों से तेज गर्मी के कारण चना के फूल गिरने लगे थे, अब ठंड के वापस लौटने से किसानों ने राहत की सांस ली है। गेहूं की फसल को इससे ज्यादा फायदा होगा।

आगे क्या... दो-तीन दिन ऐसा ही मौसम बने रहने का अनुमान

मौसम विभाग के अनुसार आगामी दो-तीन दिनों तक तापमान इसी तरह बने रहने का अनुमान है। इससे रबी फसलों का फायदा होगा। साथ ही तापमान बढने़ से सब्जियों की फसल पर भी विपरीत असर पड़ रहा था। तापमान में कमी आने से सब्जियों की फसलें भी बेहतर होगी। विशेषज्ञों के अनुसार, पहाड़ों पर हुई बर्फबारी के कारण शीतलहर का प्रभाव बढ़ा है। इस मौसमी बदलाव से किसानों को राहत मिली है। पिछले पांच दिनों से चिलचिलाती धूप से गेहूं और सब्जियों की फसलें प्रभावित हो रही थीं। कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक, इस साल दिसंबर और जनवरी में कम ठंड पडने़ से गेहूं की फसल प्रभावित हुई थी और टमाटर में जल्दी पकाव आ गया था।

पिछले एक सप्ताह का तापमान

दिनांक	अधिकतम	न्यूनतम
1 फरवरी	31.7	13.7
2 फरवरी	31.7	14.0
3 फरवरी	33.2	14.7
4 फरवरी	32.8	17.2
5 फरवरी	29.4	16.2
6 फरवरी	25.7	15.2
7 फरवरी	26.7	12.6
8 फरवरी	29.7	13.2

कार के सामने आया जंगली सूअर, बचाने के चक्कर में पलटी

बैतूल। महाकुंभ से लौट रहे श्रद्धालुओं की कार का हादसे का शिकार हो गई। मुलताई थाना क्षेत्र के डहुआ के पास तेज रफ्तार कार के सामने अचानक एक जंगली सूअर आ जाने से अनियंत्रित होकर पलट गई। कार में केरपानी गांव के 5-6 श्रद्धालु सवार थे, जो प्रयागराज से धार्मिक यात्रा कर वापस लौट रहे थे। हादसा शनिवार सुबह 6 बजे की है। कार के एयरबैग खुल जाने से सभी श्रद्धालुओं की जान बच गई और किसी को गंभीर चोट नहीं आई। स्थानीय लोगों की मदद से कार को सीधा किया। ग्रामीण मनोज बारंगे ने बताया कि दुर्घटना के बाद सभी श्रद्धालुओं ने एक प्राइवेट वाहन बुलाकर केरपानी के लिए रवाना हो गए। थाना प्रभारी देवकरण डहरिया ने बताया कि इस मामले में अभी तक कोई औपचारिक शिकायत दर्ज नहीं की गई है। किसी भी श्रद्धालु को अस्पताल में भर्ती कराने की जरूरत नहीं पड़ी।

आज होगी राज्य स्तरीय बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता

जोश से भरे गीत पर बॉडी बिल्डर करेंगे दमदार मसल्स का प्रदर्शन

बैतूल। बैतूल में पहली बार राज्य स्तरीय बॉडीबिल्डिंग चैंपियनशिप का भव्य आयोजन होने जा रहा है। राज्य शरीर सौष्ठव संस्था मध्य प्रदेश मुख्यालय उज्जैन के तत्वावधान में बैतूल जिला बॉडीबिल्डिंग संगठन द्वारा यह ऐतिहासिक प्रतियोगिता आज 9 फरवरी को शाम 6ः30 बजे से दिलबहार चौक, गंज में आयोजित की जाएगी। इस प्रतियोगिता में प्रदेशभर से करीब 300 खिलाड़ियों के शामिल होने की संभावना है। विजेताओं को तीन लाख रुपये की इनामी राशि दी जाएगी, जिसमें ÷विजय श्री ट्रॉफी÷ और ÷चैंपियन ऑफ चैंपियंस÷ खिताब भी शामिल होंगे। फिटनेस इवेंट में बॉडीबिल्डिंग के दीवाने जोश और जुनून से भरे गीत पर अपनी मसल्स का दमदार प्रदर्शन करेंगे। इस प्रतियोगिता में जाने-माने बॉडीबिल्डर अपनी मेहनत और फिटनेस का जलवा दिखाएंगे। जोशीले गानों के बीच जब ये खिलाड़ी मंच पर कदम रखेंगे, तो उनकी ऊर्जा और ताकत का प्रदर्शन हर किसी को हैरान कर देगा। बैतूल जिला बॉडी बिल्डिंग संगठन के जिला अध्यक्ष रंजीत शिवहरे ने बताया प्रतियोगिता की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया और पुरस्कार राशि 1.80 लाख रुपये तय की गई। प्रतियोगिता को निष्पक्ष और उच्च स्तरीय बनाने के लिए उज्जैन स्थित स्टेट बॉडी बिल्डिंग संगठन मुख्यालय से 20 अनुभवी जजों को बुलाने का निर्णय लिया गया। आयोजन की सफलता के लिए खिलाड़ियों और जजों के ठहरने, नाश्ते और खाने की व्यवस्था की जिम्मेदारी विभिन्न पदाधिकारियों को सौंपी गई है। संगठन के सचिव उमाकांत मालवीय, भाजपा गंज मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा, जितेंद्र मालवीय, कोषाध्यक्ष अविनाश सोनी, कार्यकारिणी अध्यक्ष रवि लोट, शाहिद अहमद और विजय भोलू देशमुख आयोजन की तैयारी में जुटे हुए हैं।यह प्रतियोगिता जोशीले गीतों के बीच आयोजित होगी, जहां खिलाड़ी अपनी मसल्स और बॉडीबिल्डिंग स्किल्स का प्रदर्शन करेंगे। बैतूल के बॉडीबिल्डिंग प्रेमियों में इस आयोजन को लेकर खासा उत्साह देखा जा रहा है। जिलेभर के युवा इस मुकाबले को देखने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त की जा रही हैं। इस प्रतियोगिता के माध्यम से बैतूल जिले में बॉडी बिल्डिंग को एक नई पहचान मिलेगी और युवा फिटनेस के प्रति और अधिक प्रेरित होंगे।

महिला आईटीआई में स्मार्ट निवेशक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

स्मार्ट निवेशक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। स्थानीय शासकीय एकलव्य महिला आईटीआई में शनिवार को प्राचार्य रेवाशंकर पंडाग्रे प्राचार्य के मार्गदर्शन में सेबी स्मार्ट ट्रेनर द्वारा एनएसई स्मार्ट निवेशक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य श्री पंडाग्रे ने बताया कि कैसे छोटी-छोटी बचत में हम बड़े लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

दिलीप कुमार सोनी ने शेयर बाजार के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम स्मार्ट ट्रेनर आशीष देशभ्रतार द्वारा बचत एवं निवेश, म्युचुअल फंड में एसआईपी के माध्यम से कैसे लघु-मध्य एवं दीर्घकालिक लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है, एसआईपी के बारे में विस्तृत जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन सुश्री प्रतिभा गौरे द्वारा किया गया। कार्यक्रम में श्रीमती पुष्पा नागले, विवेक दायमा वरिष्ठ प्रशिक्षक अधिकारी, कृष्ण कुमार बोबडे, सोनू मराठा, सुश्री तारणी यादव, सुश्री ज्योति दोडके सहित लगभग 250 छात्राएं सम्मिलित हुईं।

पाल समाज की महिलाओं का हल्दी कुमकुम कार्यक्रम आज

बैतूल। जिला पाल धनगर समाज की महिलाओं द्वारा आज 9 फरवरी को टिकरी स्थित पाल मंगल भवन में दोपहर 12 बजे से हल्दी कुमकुम कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। समाज की प्रचार सचिव श्रीमती गीता प्रकाश पाल ने बताया कि इस दौरान विभिन्न स्पर्धा आयोजित की जाएगी। समाज की प्रमिला मोरे, अनीता पाल, वैजयंती चंदेल, सीमा पाल, संगीता माखन पाल ने समाज की महिलाओं से कार्यक्रम में यथा समय उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

पहाड़ वाली माता मंदिर काली चट्टान पर प्राण प्रतिष्ठा और महायज्ञ संपन्न

बैतूल। काली चट्टान पर स्थित पहाड़ वाली माता मंदिर में स्व.मनोज अग्रवाल के परिवार की ओर से नर्मदेश्वर शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया। शुक्ल पक्ष गुप्त नवरात्र की सप्तमी तिथि से यह अनुष्ठान प्रारंभ हुआ, जिसमें विधिपूर्वक वैदिक मंत्रोच्चार और पूजन संपन्न हुआ। प्राण प्रतिष्ठा के उपरांत चौसठ योगिनी मंत्रों से हवन किया गया, जिसमें गणेश मंत्रों सहित अनेक देवी-देवताओं की आहुतियां अर्पित की गईं। इसके पश्चात भव्य महाआरती का आयोजन हुआ, जिसमें भक्तों ने पूरे श्रद्धा भाव से भाग लिया। महायज्ञ की पूर्णाहुति के बाद विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जहां बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। इस धार्मिक आयोजन की व्यवस्थाओं का दायित्व आयोजन समिति ने बखूबी संभाला। समिति के अध्यक्ष शेरू यादव, आरसी मिश्रा, रवि धोटे, भानू साहू, गोलू चढोकार, पुसी चौलिया, सोनू कोठे, प्रदीप माकोड़े, संजू विश्वकर्मा, सुनील पवार, सतीष माकोड़े, सचिन ठाकुर और अनिल सोलंकी मुकेश आर्य नरेन्द्र दीक्षित ने पूजा-अर्चना में सहभागिता की और समस्त कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया।

समन्वित प्रयासों से जिला अस्पताल में कैंसर यूनिट स्थापित की जाएगी- सारंग

स्वर्गीय मधुलिका गर्ग अग्रवाल स्मृति में निशुल्क 8वा कैंसर जांच उपचार एवं जागरूकता शिविर आयोजित

बैतूल। स्वर्गीय मधुलिका गर्ग अग्रवाल स्मृति निशुल्क 8 वा कैंसर जांच उपचार एवं जागरूकता शिविर शनिवार को न्यू बैतूल स्कूल, कोठीबाजार में संपन्न हुआ। जिसमें केंद्रीय राज्यमंत्री भारत सरकार दुर्गादास उईके, सहकारिता मंत्री मध्यप्रदेश शासन विश्वास कैलाश सारंग, वरिष्ठ अधिवक्ता राधाकृष्ण गर्ग, विधायक हेमंत खंडेलवाल, विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे, विधायक श्रीमती गंगाबाई उईके, नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, पूर्व विधायक निलय डागा, सुधाकर पवार, बाबूलाल भगत, मोहित गर्ग, बबला शुक्ला सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। केंद्रीय मंत्री श्री उईके ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान कृष्ण ने श्रीमद भगवदगीता में आत्मा की शाश्वत सत्ता का प्रतिपादन किया हैं। स्वर्गीय मधुलिका गर्ग जी की स्मृति में आयोजित इस कैंसर जागरूकता शिविर में मधुलिका बहन आज सूक्ष्म रूप से हमारे बीच उपस्थित हैं। उन्होंने कहा कि हमारी ऋषि परम्पर में मनुष्य को पंचाग्नि विद्या की चिंता करने का ज्ञान दिया हैं। सभी ऋतुओं का हमारे शरीर के लिए विशेष महत्व है। शीत ऋतु में शरीर संकुचन और प्रकुंचन की प्रक्रिया से गुजरती है। ग्रीष्म ऋतु में स्वमेव विजातीय द्रव्य का निष्कासन होता हैं। विजातीय द्रव्य जो आवश्यकता से अधिक संचित होता हैं। तो विविध प्रकार की बीमारियां होती है। वर्षा ऋतु हमे त्वचा संबंधी कई बीमारियों से बचाता हैं। उन्होंने कहा कि शरीर का शोधन सही ढंग से करें तो ही हम कई गंभीर बीमारियों से बच सकते हैं। स्वास्थ व्यक्ति शारीरिक, मानसिक ओर भावनात्मक से रूप से स्वस्थ होता है। उन्होंने कैंसर जांच एवं जागरूकता शिविर के लिए गर्ग परिवार और संतुलन संस्था को साधुवाद देता हूं जो विशिष्ट और पुनीत कार्य सम्पन्न हुआ हैं।

सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण विभाग मंत्री श्री सारंग ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार स्वास्थ्य, शिक्षा, विकास के जनकल्याण के हर पहलू पर काम कर रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने कोरोना महामारी के रोकथाम का आदर्श मॉडल स्थापित किया हैं। इसी प्रकार आयुष्मान योजना के माध्यम से हर गरीब व्यक्ति को 5 लाख तक राशि का निशुल्क उपचार उपलब्ध कराया जा रहा हैं। इसी प्रकार 70 प्लस आयु के भी हर व्यक्ति को भी निशुक उपचार से लाभान्वित किया जा रहा हैं। उन्होंने कहा कि सरकार के साथ समाज की भी अपनी जिम्मेदारी होती हैं। इसी दिशा में गर्ग परिवार और संतुलन संस्था उल्लेखनीय काम कर रही हैं। कैंसर से बचाव प्राथमिक जांच और त्वरित उपचार से ही संभव हैं। जिसके लिए जनजागरण जरूरी हैं। जन जागरण का संदेश नीचे तक पहुंचे तभी परिमाण सुखद होते हैं। उन्होंने स्वर्गीय मधुलिका गर्ग को श्रद्धांजलि दी।

विधायक श्री खंडेलवाल ने कहा कि कैंसर एक ऐसी बीमारी और चुनौती है, जो वर्तमान में सबसे ज्यादा चिंता का विषय हैं। इससे कई लोग ओर उनके परिजन संघर्ष कर रहे। कैंसर से बचाव के लिए जरूरी है कि प्रारंभिक स्तर पर ही इसकी जांच और उपचार हो जाए। संतुलन संस्था इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रही हैं। उन्होंने कहा कि जिला अस्पताल में कैंसर यूनिट स्थापित करने के प्रयास किए जाएंगे। समाज की सहभागिता से कैंसर के जांच ओर उपचार के लिए हर संभव बेहतर कार्य किया जाएगा। विधायक डॉ पंडाग्रे ने संतुलन संस्था का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कैंसर की जांच और उपचार के लिए निश्शुल्क शिविर आयोजन की ऐतिहासिक पहल की हैं। कैंसर एक ऐसी बीमारी जिसका समय रहता पता चलना कठिन होता हैं। जिसका ट्रीटमेंट भी बहुत मुश्किल होता है। जरूरी है कि वजन कम होना, भूख न लगाना, लगातार बुखार रहना इत्यादि शुरुआती लक्षण दिखाई देने पर ही जांच कराएं। जरूरी है कि कैंसर की संभावना वालें कारक जैसे तंबाकू का सेवन, धूम्रपान इत्यादि से बचें और स्वस्थ जीवन का लाभ लें। पूर्व विधायक श्री निलय डागा ने भी अपने संबोधन में कैंसर के प्रति जागरूक किया। श्री मोहित गर्ग ने अपने स्वागत उद्बोधन में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा जिले में पायलट प्रोजेक्ट के तहत सर्वाइकल कैंसर के प्रति संचालित टीकाकरण अभियान की और आयुष्मान योजना सराहना की। उन्होंने कार्यक्रम की रूपरेखा के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में स्वास्थ्य की दिशा में उल्लेखनीय कार्य के लिए सीएमएचओ डॉ रविकांत उईके,डॉ रानू वर्मा, पंभाबिहारी डी डी बारस्कर, लायंस कल्ब के सदस्यों को सम्मानित किया गया।

एंटरप्रेन्योरशिप वर्कशॉप में कारीगरों को सिखाए व्यापार के गुर

ग्रामीण हस्तशिल्पियों को मिला उद्यमिता का मंत्र

बैतूल। दृष्टिकोण आर्ट एंड क्राफ्ट प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड बैतूल द्वारा आयोजित एवं विकास आयुक्त हस्तशिल्प वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित छह दिवसीय एंटरप्रेन्योर डेवलपमेंट प्रोग्राम का समापन 8 फरवरी को होटल आर्य, इटारसी रोड पर हुआ। इस कार्यशाला में टिगरिया, जामठी, गेहूंरास सहित अन्य गांवों के धातु शिल्प से जुड़े 20 पंजीकृत हस्तशिल्पियों ने भाग लिया। छह दिनों तक चली इस कार्यशाला में भोपाल से आए विशेषज्ञों ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए, जिससे ग्रामीण अंचल के इन हस्तशिल्पियों को उद्यमिता के गुर सिखाए गए। विशेषज्ञों ने विस्तार से बताया कि सफल उद्यमी बनने के लिए किन चीजों की आवश्यकता होती है और बाजार में कैसे अपनी पहचान बनाई जा सकती है। कार्यक्रम के दौरान छह विषय विशेषज्ञों ने प्रत्येक दिन अलग-अलग विषयों पर जानकारी दी। हितग्राहियों को मार्केटिंग, जीएसटी, डिजिटल प्लेटफॉर्म केवाईसी, जेम

पोर्टल, बैंक लोन सहित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रशिक्षण दिया गया। भोपाल से आईं विशेषज्ञ एवं विकास आयुक्त हस्तशिल्प वस्त्र मंत्रालय में डिजाइनर सुश्री रुक्मणी पवार ने डिजाइनिंग के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी और इसमें आने वाली चुनौतियों के समाधान सुझाए। विशेषज्ञ ईशान शर्मा ग्राफिक डिजाइनर ने बताया कि बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार डिजाइन और डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कैसे किया जा सकता है। जीएसटी विशेषज्ञ मोहम्मद अली ने जीएसटी रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया, आवश्यक दस्तावेजों और इससे मिलने वाले लाभों पर विस्तार से जानकारी दी। दृष्टिकोण प्रोड्यूसर कंपनी के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर देवेंद्र सिंह ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्लस्टर से जुड़े हस्तशिल्पियों को उद्यमी बनाना है, जिससे वे स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर सकें और समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकें। कार्यक्रम के दौरान सहायक निदेशक हस्तशिल्प विकास आयुक्त हस्तशिल्प वस्त्र मंत्रालय नागपुर अवधेश ठाकुर ने बताया कि भारत सरकार समय-समय पर ग्रामीण अंचलों और जिला स्तर पर इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन करती रहती है, ताकि स्थानीय हस्तशिल्पी राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अपने व्यवसाय को बढ़ा सकें।

खंडेलवाल और पंडाग्रे ने किया सर्वज्ञ फिजियोथैरेपी सेंटर का शुभारंभ

मरीजों को मिलेगी मुफ्त परामर्श की सुविधा

बैतूल। सर्वज्ञ फिजियोथैरेपी सेंटर का शुभारंभ विधायक बैतूल हेमंत खंडेलवाल और विधायक आमला योगेश पंडाग्रे ने फीता काटकर किया। यह सेंटर ब्रज मेडिकल स्टोर के पीछे, लिंक रोड, चंद्रशेखर वार्ड में स्थित है। विधायक हेमंत खंडेलवाल और डॉ. योगेश पंडाग्रे ने इस अवसर पर कहा कि यह सेंटर बैतूल और आसपास के लोगों के लिए बेहद फायदेमंद साबित होगा। सेंटर के शुभारंभ पर डॉ. जयसिंहपुरे, हर्ष राठौर, साहिल राठौर, अरुण राठौर सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। सर्वज्ञ फिजियोथैरेपी सेंटर

की खासियत यह है कि यहां मरीजों का इलाज बिना दवाई और बिना ऑपरेशन के किया जाएगा। हर महीने की 7 तारीख को मरीजों को मुफ्त परामर्श की सुविधा दी जाएगी। सेंटर का संचालन डॉ. शीतल राठौर कर रही हैं, जो बीपीटी, एमआईपी और एनएमडीएनटी से प्रशिक्षित हैं। यहां मरीजों को सुबह 9ः30 से दोपहर 2ः30 बजे और शाम 4ः30 से रात 8ः30 बजे तक सेवाएं दी जाएंगी। सेंटर में आधुनिक मशीनों और नई तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। इनमें एडवांस पीईएमएफ, इलेक्ट्रोथेरेपी, ड्राई नीडलिंग, आईएएसटीएम, टैपिंग, कंप्रेशन थेरेपी, एक्सरसाइज और मैनुअल थेरेपी जैसी सुविधाएं शामिल हैं। सेंटर में कमर दर्द, एड़ी दर्द, साइटिका, स्लीप डिस्क, टेनिस एल्बो, अर्थराइटिस, लकवे, कंधा जाम होने, स्पॉन्डिलाइटिस, मांसपेशियों में दर्द, फ्रैक्चर और ऑपरेशन के बाद जोड़ों के जाम होने जैसी समस्याओं का इलाज किया जाएगा। इसके अलावा जन्मजात बीमारियों से ग्रस्त बच्चों का भी उपचार यहां संभव होगा।

शादी समारोह में जा रहे थे दंपत्ति को अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर

पत्नी की मौत, पति आईसीयू में भर्ती, बेटा भी घायल

बैतूल। शुक्रवार शाम शादी समारोह में जा रहे दंपत्ति को एक अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में पत्नी की मौत हो गई, जबकि पति गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना चिचोली थाना क्षेत्र की है। जिला अस्पताल पुलिस चौकी के अनुसार गोधना निवासी दिनेश यादव शुक्रवार शाम को अपनी पत्नी रुक्मिणी (38) और 8 वर्षीय बेटे के साथ बाइक पर बोरी गांव शादी समारोह में शामिल होने जा रहे थे। तभी गोदना जोड़ पर किसी अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में दोनों गंभीर घायल हो गए। वहीं बेटे को भी चोट आई है। राहगीरों की मदद से घायल दंपत्ति को एंबुलेंस से पहले चिचोली सीएचसी में भर्ती कराया गया। हालत गंभीर होने के कारण दोनों को जिला अस्पताल बैतूल रेफर कर दिया गया। इस दौरान रुक्मिणी ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। वहीं दिनेश की हालत गंभीर बनी हुई है और उन्हें ढ्ढष्ट में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है। पुलिस ने महिला के शव

का पीएम करवाया है, इसे परिजनों को सौंपा जाएगा। स्थानीय लोगों ने बताया कि दंपत्ति के दो बच्चे हैं, पुलिस अज्ञात वाहन की तलाश में जुटी है।

अंतिम छोर के बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा जाए: यादव

हायर सेकेंडरी स्कूल चिरापाटला में संकुल केंद्रों की समीक्षा बैठक आयोजित

बैतूल। पाटाखेड़ा और चिरापाटला संकुल केंद्र के अंतर्गत संचालित 58 स्कूलों की बैठक हायर सेकेंडरी स्कूल चिरापाटला में आयोजित की गई। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा मंडल अध्यक्ष राजेंद्र यादव प्रमुख रूप से मौजूद रहे। बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा मंडल अध्यक्ष श्री यादव ने कहा कि गांव के अंतिम छोर के बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा जाए। विद्यालय में बच्चों के ठहराव तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बड़ी जिम्मेदारी शिक्षक की है। शिक्षक का काम बच्चों को शिक्षा देना है। शिक्षक यह भी सुनिश्चित करें कि विद्यार्थियों को अध्ययन कार्य में किसी भी प्रकार की परेशानी न हो। कक्षा पहली से लेकर 8वीं तक के विद्यार्थियों को मिड डे मील के अनुसार पोषण युक्त भोजन मिले। इसके अलावा कंटिजेंसी की राशि से स्कूल में फर्नीचर, रंग रोगन के कार्य समय पर पूर्ण कराया जाए। उन्होंने कहा कि आगामी समय में स्कूलों का निरीक्षण किया जाएगा। बैठक में प्रधान पाठकों को निर्देश दिए कि निरीक्षण के दौरान यदि स्कूल में किसी भी तरह की लापरवाही, स्कूल समय पर

नहीं खुले तथा शिक्षक बिना कारण अनुपस्थित मिले तो उच्च कार्यालय को कार्यवाही के लिए प्रस्ताव प्रेषित कर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

कक्षा 5वी एवं 8वीं की वार्षिक परीक्षा पर की चर्चा- बैठक के दौरान कक्षा 5वी, 8वीं की वार्षिक परीक्षा पर विस्तृत चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों की परीक्षा को काफी कम समय बचा हुआ है। शिक्षक यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा की तैयारी शत प्रतिशत पूर्ण हो। पढ़ाई में आ रही कठिनाइयों को दूर किया जाए, ताकि वार्षिक परीक्षा परिणाम बेहतर हो सके। इस दौरान नवभारत साक्षरता कार्यक्रम की भी समीक्षा की गई।

90 के दशक में एक-दो नहीं, कई ऐसे सुपरस्टार्स थे जिनकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर महीनों तक चलती थी। लेकिन, एक एक्टर ऐसा भी था, जो सभी सितारों पर अकेले ही भारी पड़ा। सुपरस्टार्स से भरी 90 के दशक की इस फिल्म में एक नया नवेला एक्टर सब पर भारी पड़ा। ते साउथ में भी दो बार बनी।

90 के दशक में हुआ एक सितारे का जन्म

बॉलीवुड इंडस्ट्री में एक से बढ़कर एक दिग्गज एक्टर हैं, जो न सिर्फ लोगों के दिलों पर बल्कि बॉक्स ऑफिस पर भी राज करते हैं। लेकिन, एक एक्टर ऐसा भी है जो पिछले 4 दशकों से लगातार फिल्मों में काम रहा हैं। उनकी पहली ही फिल्म हिट रही और दूसरी से तो ये नया नवेला एक्टर बड़े-बड़े सुपरस्टार्स पर भी भारी पड़ गया था। पिछले 4 दशकों से लगातार अपनी शानदार एक्टिंग और दमदार फिल्मों से इंडस्ट्री पर राज करने वाला ये एक्टर है आमिर खान। इस एक्टर ने 1988 में आई फिल्म 'कयामत से कयामत तक' से फिल्मों में डेब्यू किया था। आमिर की पहली ही फिल्म ब्लॉकबस्टर साबित हुई।

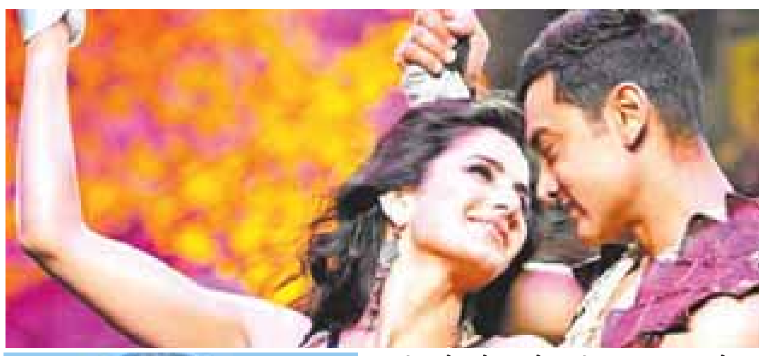

'कयामत से कयामत तक' उस साल की तीसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म थी। लेकिन, एक्टर की दूसरी फिल्म ने तो बॉक्स ऑफिस पर तबाही ही ला दी थी। उस एक फिल्म से आमिर खान रातों रात सुपरस्टार बन गए। उन्होंने दूसरी ही फिल्म से इंडस्ट्री में वो मुकाम हासिल किया, जिसमें सितारे सालों-साल कड़ी मेहनत के बाद कामयाब होते हैं।

'कयामत से कयामत तक' के बाद साल 1990 में आमिर खान की फिल्म 'दिल' सिनेमाघरों में रिलीज हुई और यह रिलीज के साथ ही छा गई। शायद ही किसने सोचा होगा कि यह नया नवेला एक्टर अपनी दूसरी ही फिल्म से बड़े-बड़े सुपरस्टार्स के छक्के छुड़ा देगा। दिल ने बॉक्स ऑफिस पर अपने बजट से 10 गुना ज्यादा की कमाई की। 2 करोड़ के बजट में बनी इस फिल्म ने वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस पर कुल 20 करोड़ की कमाई की थी।

आमिर खान की रोमांटिक ड्रामा फिल्म 'दिल' ने उस समय के सुपरस्टार सनी देओल की 'घायल' और अमिताभ बच्चन की 'आज का अर्जुन' और 'अग्निपथ' जैसी हिट फिल्मों की कमाई को भी पछाड़ दिया था। 'दिल' में आमिर खान और माधुरी दीक्षित के अलावा अनुपम खेर और सईद जाफरी भी अहम भूमिकाओं में थे। इसे इंद्र कुमार ने अपने निर्देशन में पहली बार निर्देशित किया था।

एक गलती से तबाह हुआ करियर

फिल्म इंडस्ट्री में बहुत से कलाकार ऐसे हैं, जिनमें टैलेंट होने के बाद भी उनको पहचान नहीं मिल पाई। बीते सालों में बहुत से सितारे गुमनामी का शिकार हो गए। वहीं कुछ सितारे ऐसे हैं, जो बुढ़ापा आने के बाद भी अपना करियर बनाने में जुटे हैं। ऐसा ही एक कलाकार हैं, जिन्हें लोग सलमान खान के साले के तौर पर जानते हैं। लेकिन, एक छोटी सी गलती की वजह से इस कलाकार का करियर इसके फैंस ने ही तबाह कर दिया था।

यह कलाकार है पुनीत इस्सर, जो कि अपने जमाने के नामचीन विलेन रह चुके हैं। 6 फुट 2 इंच के पुनीत इस्सर अपने खतरनाक रोल्स के लिए जाने जाते हैं। किसी जमाने में पुनीत इस्सर ने साल 1991 में आई फिल्म 'सनम बेवफा' में सलमान खान के साले का रोल अदा किया था। हालांकि पुनीत इस्सर बॉलीवुड में केवल साइड हीरो बनकर ही रह गए। दुखद पहलू यह कि फिल्म 'कुली' ने पुनीत इस्सर की जिंदगी को हमेशा के लिए पलटकर रख दिया।

2 अगस्त 1982 के दिन पुनीत इस्सर के हाथों एक हादसा हुआ जिसमें अमिताभ बच्चन बुरी तरह से घायल हो गए थे। पुनीत इस्सर को अमिताभ बच्चन के साथ लड़ाई करनी थी। इस दौरान पुनीत इस्सर के घूंसे की वजह से वे घायल हो गए। इस चोट की वजह से काफी समय तक अमिताभ बच्चन ब्रीच कैंडी अस्पताल में जिंदगी और मौत से जूझे थे।

इस हादसे के बाद लोगों ने पुनीत इस्सर को एक सिरे से नकार दिया था। एक-एक करके पुनीत इस्सर को सभी फिल्मों से बाहर कर दिया गया। बताया जाता है कि पुनीत इस्सर को एक साथ 6 फिल्मों से निकाला गया था। 6 साल तक पुनीत इस्सर को किसी ने बॉलीवुड में काम ही नहीं दिया। इसके बाद पुनीत इस्सर ने साल 1988 में महाभारत में दुर्योधन का किरदार निभाकर टीवी पर करियर शुरू किया था। इसके बाद सलमान खान ने भी दुर्योधन का किरदार निभाने वाले पुनीत इस्सर को 'बिग बॉस' में आने का मौका दिया। 'बिग बॉस' से लोगों को पता चला कि पुनीत इस्सर असल जिंदगी में कितने अच्छे आदमी हैं।

रियल बॉक्स

25 साल से अमिताभ 'केबीसी' में ही लॉक

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

अमिताभ बच्चन की तरह बड़े परदे पर दूसरा एंग्री यंग मैन हुआ और न छोटे पर्दे पर उनके जैसा दूसरा सफल गेम शो होस्ट होगा। दोनों भूमिकाएं अलग-अलग हैं, पर इस शख्स ने दोनों में महारत हासिल की। साल 2000 में शुरू हुए टीवी गेम शो 'कौन बनेगा करोड़पति' ने 25 साल पूरे कर लिए। किसी गेम शो ने आजतक छोटे परदे पर ये कमाल नहीं किया। पर 'कौन बनेगा करोड़पति' (केबीसी) की बात अलग है। शो का फॉर्मेट अनोखा है, इसलिए दर्शकों को पसंद आना ही था, पर इस शो के एंकर अमिताभ बच्चन भी बेजोड़ हैं। उन्होंने इस शो को ऊंचाई दी और शो में उन्हें समृद्धि। 25 साल पहले जब वे इस शो से जुड़े थे, उनके सितारे गर्दिश में थे। लेकिन, उन्हें इंडस्ट्री में दोबारा स्थापित करने में 'केबीसी' का अहम रोल रहा।

टीवी पर आने वाले किसी भी शो को दर्शक तभी तक याद रखते हैं, जब तक वो प्रसारित होता है। लेकिन, कौन बनेगा करोड़पति यानी 'केबीसी' इसका अपवाद है। साल में करीब दो-ढाई महीने आने वाले इस शो का इसके चाहने वाले बाकी के दस महीने इंतजार करते हैं। ये कुछ सालों की बात नहीं है, बल्कि ये सिलसिला 25 साल से चल रहा है और साल दर साल इसका जादू दर्शकों पर ज्यादा ही असर करने लगा। ये शो के फॉर्मेट का तो प्रभाव है ही, लेकिन सबसे ज्यादा आकर्षण इसके एंकर अमिताभ बच्चन का है। किसी गेम शो का लगातार 25 साल प्रसारित होना और उसमें 24 साल एक ही एंकर का होना अपने आप में रिकॉर्ड भी है। इस शो को एक साल शाहरुख़ खान ने भी होस्ट किया, लेकिन अमिताभ बच्चन जैसा प्रभाव वे भी छोड़ सके। अमिताभ हॉट सीट पर बैठने वाले कंटेस्टेंट से 16 सवाल पूछते हैं और हर सवाल के सही जवाब पर कंटेस्टेंट को पैसे मिलते जाते हैं। शुरू में सबसे बड़ी राशि एक करोड़ रूपए थी, धीरे-धीरे यह 5 करोड़ हुई और अब 7 करोड़ हैं।

इस शो ने अमिताभ के स्टारडम को नया आयाम दिया। लेकिन, सच्चाई ये भी है कि शो से पहले बच्चन फैमिली ने उन्हें छोटे परदे पर ये शो करने से रोका था। उनसे कहा था कि ऐसा कोई गेम शो करना बड़ी गलती होगी। फिल्म के दर्शक उन्हें 70 एमएम पर देखना चाहते हैं, वे छोटी टीवी स्क्रीन पर देखेंगे, तो आपका कद कम हो जाएगा। लेकिन, बीते 25 सालों ने इस बात को गलत साबित कर दिया। खास बात यह कि इस बात का जिक्र खुद अमिताभ ने इस शो के बीच में किया। बीते सालों में समय के मुताबिक शो के फॉर्मेट में कुछ बदलाव किए गए। सवाल-जवाब के फॉर्मेट को छोड़कर इसमें बहुत कुछ जोड़ा-घटाया गया। टीआरपी और लोगों के मनोरंजन का ख्याल रखते हुए नए एंगल्स को इंट्रोड्यूस किया। लेकिन, शो ने अपनी सच्चाई को नहीं खोया। आज भी इस गेम शो का पहला फोकस सवाल-जवाब ही होता है। लाइफ-लाइन में जरूर कुछ घट-बढ़ होती रही।

अमिताभ अपने जीवन और फिल्मों से जुड़े पुराने किस्से, अपने दिल की बातें लोगों से कहते हैं। इसके साथ ही कंटेस्टेंट्स की इमोशनल लाइफ को सबसे ज्यादा हाईलाइट किया जाता। उसके छोटे से घर, मिट्टी के चूल्हे, जीवन के अभाव और अधूरी इच्छाओं को सामने लाकर कंटेस्टेंट की प्रतिभा को आगे लाया जाता है। सिर्फ इतना ही नहीं, जब कोई सेलिब्रिटी गेस्ट शो में आते हैं, तब भी शो की गंभीरता को बरक़रार रखा जाता है, ताकि मर्यादा नहीं टूटे। दूसरे रियलिटी शो की तरह कोई भी नाटकीय या रोने-धोने के जबरदस्ती वाले एंगल नहीं होते। यही वे बातें हैं, जो अमिताभ के इस शो को दूसरों से अलग बनाती हैं। आज अमिताभ बच्चन 'केबीसी' की कामयाबी की सिल्वर जुबली मना रहे हैं। इस शो को देखते-देखते दूसरी पीढ़ी आ गई। लेकिन, शो की ऊर्जा बरक़रार है। हॉट सीट तक आने वाले अपने बड़े-बड़े सपने लेकर पहुंचते हैं और ज्यादातर कुछ न कुछ लेकर ही जाते हैं। जो वास्तव में इंटेलिजेंट होते हैं, वे 3 लाख 20 हजार से ऊपर जीतकर जरूर जाते हैं। लेकिन, कंटेस्टेंट के लिए सबसे कीमती होता है अमिताभ जैसी हस्ती से मिलना और बात करना।

यह शो उस दौर में शुरू हुआ था, जब अमिताभ को भी एक लाइफ लाइन की जरूरत थी। फ़िल्में लगातार पिट रही थी। उनकी खड़ी की गई कंपनी 'एबीसीएल' घाटे की घाटी से उतरकर खड्ड में जा गिरी थी। लेकिन, इस शो की बदौलत सब कुछ संभल गया। आज अमिताभ 82 पार कर चुके। लेकिन, उम्र के इस दौर में भी हॉट सीट पर बैठे कंटेस्टेंट से बात करने का उनका अंदाज अनोखा है। हर कंटेस्टेंट का मनोबल बढ़ाना, अपने पिता हरिवंश राय बच्चन की कविता और उनसे जुड़े किस्से सुनाने और मजाक करने का उनका अलग ही अंदाज है। फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट के बाद जब कंटेस्टेंट हॉट सीट पर पहुंचता है, तो अमिताभ के सामने आकर उसका आत्मविश्वास मानो जवाब देता है। ऐसे कई कंटेस्टेंट को याद किया जा सकता है, जो अमिताभ को इतने नजदीक से देखकर घबरा से जाते हैं। लेकिन, बतौर एंकर अमिताभ उन्हें सहज करने में भी देर नहीं करते। किसी भी उम्र, किसी भी राज्य या भाषा में बातें करने वाला हो, वे सबसे सहजता से उससे तालमेल बैठाकर शो को मनोरंजक बना देते हैं।

आज ढाई दशक बाद भी हॉट सीट तक पहुंचने वाले कंटेस्टेंट की बातें आश्चर्यजनक होती हैं। कोई बीस साल से यहां आने का इंतजार कर रहा होता है, कोई कहता है जब यह शो शुरू हुआ तब वे पैदा ही हुए थे। कोई कहता है उस साल उसकी शादी हुई थी, आज बच्चे बड़े हो गए। एक पीढ़ी निकल गई, दूसरी पीढ़ी आ गई। लेकिन, मुस्कुराते, खिलखिलाते और तालियां बजाते अमिताभ बच्चन हॉट सीट पर आज भी बैठने वालों में जोश भरते का कोई मौका नहीं चूकते। जब वे फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट के लिए सवाल पूछते हैं, तब उनका जोश देखने लायक होता है। 82 पार के इस शख्स की फुर्ती वास्तव में देखने लायक होती है। वे दौड़ते हुए आते हैं और पूरी तत्परता के साथ कंटेस्टेंट को हॉट सीट पर बैठाते हैं। यदि कंटेस्टेंट महिला हो, तो कुर्सी थामते हैं और उसे सहज करते हैं। फिर भावुक करने वाले उस पल को हल्का-फुल्का बनाते हुए सवालों का सिलसिला शुरू करते हैं।

फिल्मों में अमिताभ बच्चन के होने का मायना क्या है, ये फिल्म देखने और न देखने वाले दोनों जानते हैं। वे अपने किरदार को 'लार्जर देन लाइफ' बनाने के लिए विख्यात रहे हैं। एंग्री यंग मैन की तरह फिल्मी परदे पर लार्जर देन लाइफ का प्रभाव भी उनकी शख्सियत की विशिष्टता से जुड़ा है। भारी और दमदार आवाज में अपनी प्रभावशाली संवाद अदायगी से थ्रिल पैदा कर देना और दर्शकों के दिलों दिमाग को झकझोर देना उनके अभिनय कौशल की सबसे बड़ी खासियत है। यही वजह है कि 'केबीसी' के मंच पर भी अमिताभ अपनी पर्सनालिटी से पूरा रंग जमा देते हैं। इसके बाद कब-कब चमत्कार हुए, ये शो देखने वाले जानते ही हैं। क्योंकि, 'केबीसी' ने कई की जिंदगी में रंग भरे। किसी की झोपड़ी महल बन गई, किसी का लाखों का कर्ज उतर गया, कोई अपनी या परिवार में किसी की गंभीर बीमारी का इलाज करा सका तो किसी की बेटी की शादी धूमधाम से हुई। एक खासियत यह भी है कि हॉट सीट पर बैठने वाला अपनी हैसियत नहीं छुपाता। यह जानते हुए कि वो जो बताएगा, वो सारी दुनिया जान जाएगी। कौन कितना जरूरतमंद है, किसके कौन से सपने और अरमान हैं, कौन कितना फटेहाल है और कितना अमीर आज टीवी पर प्रसारित होने वाला 'केबीसी' शो उसकी बानगी पेश करता है।

बताते हैं कि जब इस शो का फॉर्मेट बनाया गया था, तब 'केबीसी' के प्रेजेंटेशन के लिए कोई स्क्रिप्ट तय नहीं की गई थी। बतौर एंकर अमिताभ बच्चन कंटेस्टेंट से क्या और कैसी बात करेंगे, इस बारे में कोई तैयारी नहीं थी। सिर्फ शो के सवालों का फॉर्मेट तय हुआ था। हर एपिसोड को शुरू करने और आगे बढ़ाने की कला अमिताभ ने खुद विकसित की। इस बात को सभी स्वीकार भी करेंगे कि 'केबीसी' पूरी तरह अमिताभ केंद्रित होकर रह गया। उन्होंने शो की एक नई भाषा विकसित की। कम्प्यूटर के आगे 'महाशय' और 'जी' लगाकर अनोखा प्रचलन शुरू किया। कंप्यूटर महाशय, कंप्यूटर महोदय, कंप्यूटर जी, ताला लगा दिया जाए, लॉक कर दिया जाए, टिकटिकी जी, दुगुनास्त्र, बज़रबट्टू या महिला प्रतियोगी के लिए 'देवी जी' जैसे शब्द के प्रयोग उन्होंने ही किए। यह किसी स्क्रिप्ट का हिस्सा नहीं होते। इसमें अमिताभ बच्चन की आवाज का भी अपना जादू है। यह उनकी ही खासियत है कि आज 25 साल बाद भी शो में उनकी जुबान पर रिपिटेड शब्द बोर नहीं करते।

25 साल पहले जब टीवी पर पहली बार 'कौन बनेगा करोड़पति' गेम शो शुरू हुआ था, तो छोटे परदे पर गेम शो की बाढ़ सी आ गई थी। अमिताभ के इस शो को टक्कर देने के लिए कई गेम शो छोटे परदे पर प्रसारित किए गए। अनुपम खेर और मनीषा कोईराला का गेम शो 'सवाल दस करोड़ का' भी आया, पर अमिताभ बच्चन के 'एक करोड़' के आगे फीका साबित हुआ। सलमान खान ने 'दस का दम' शुरू किया, पर चला नहीं। यहां तक कि अमिताभ की गैर मौजूदगी में शाहरुख़ खान ने भी 'केबीसी' का एक सीजन होस्ट किया, पर अमिताभ जैसा जादू नहीं बना सके और कुछ विवाद भी हुए। दरअसल, ये शो जैसे अमिताभ की पर्सनालिटी के साथ चस्पा हो गया है। धीरे-धीरे केबीसी सिल्वर जुबली साल में प्रवेश कर गया। केबीसी भले ही प्रतियोगियों को जवाब देने के लिए चार ऑप्शन देता है, लेकिन खुद केबीसी के सामने अमिताभ बच्चन के सिवा दूसरा कोई विकल्प नहीं है, जो उसे और आगे ले जा सके।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा

अशोक जोशी

कोई भी हिंदी फिल्म गानों के बिना पूरी नहीं होती है। गीत न केवल फिल्मों की लम्बाई को बढाते है, बल्कि कहानी से जूझ रहे दर्शकों को कुछ लम्हें पैर थिरकाने का मौका भी देते हैं। वैसे तो कोशिश यही की जाती है कि फिल्मी गीत फिल्म की कहानी के अनुरूप हो। लेकिन, लगभग सभी फिल्मों में चंद गीत ऐसे होते हैं जो नायिका या नायक की तारीफ करते करते बुने जाते हैं। इन गीतों में तारीफ करने का अंदाज कुछ ऐसा होता है कि श्रोता गीत सुनते-सुनते नायिका या नायक के चेहरे की कल्पना करने लगता है।

फिल्मों में नायिका को अपने प्रेमपाश में बांधने के लिए नायक सबसे पहले जो काम सबसे करता है, वह होता है उसकी खूबसूरती की तारीफ करना। अलग अलग गीतकारों और संगीतकारों ने अपने अपने अंदाज में नायिका के हुस्न की तारीफ कर सैकड़ों गीतों को रचा है। इन सभी गीतों में नायिका के सौंदर्य का गुणगान करने की परम्परा निभाई जाती है। बस कहने का अंदाज थोड़ा अलग होता है। शायद ही ऐसा कोई नायक होगा, जिसने फिल्मों में नायिका के सौंदर्य, उसके चेहरे , उसके अंगों और उसकी अदाओं की तारीफ न की होगी। यदि नायिका के चेहरे की बात की जाए तो चेहरा है या चांद खिला, तेरे चेहरे में वो जादू हैं, आपका क्या चेहरा माशा अल्लाह और चेहरे से जरा आंचल जब आपने सरकाया दुनिया ये पुकार उठी लो चांद निकल आया जैसे गीत बरबस याद आ जाते हैं। कुछ नायक चेहरों पर गिरी जुल्फों को हटाने की गुजारिश करते हुए गा उठता है चेहरे पे गिरी जुल्फें कह दो तो हटा दूं में गुस्ताखी माफ।

कहीं पूरे चेहरे तो कहीं चेहरे के विभिन्न हिस्सों की तारीफ करते हुए गीत रचे जाते हैं। चूंकि, आंखों को प्रेम अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम माना गया है। इसलिए गीतकारों ने आंखों को लेकर ही सबसे ज्यादा गीत लिखे। इन सैकड़ों गीतों में तेरी आंखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है, आंखों में कयामत की काजल, नैन से नैन नाही मिला, छलके तेरी आंखों से गुलाब और ज्यादा, आंखों की तलाशी दे दे मेरे दिल की हो गई चोरी, आपकी आंखों में कुछ महके हुए से ख्वाब हैं, तेरी झील सी आंखों में, तेरी नीली नीली आखों के दिल पे तीर चल गए। यह आंखें देखकर कर हम सारी दुनिया भूल जाते हैं, नैन तुम्हारे मजेदार ओ जनाबे आली, सागर जैसी आंखों वाली ये तो बता तेरा नाम है क्या जैसे गीत पर्दे पर आए।

आंखों के बाद गीतकारों ने दर्शकों को नायिका की नागिन जैसी जुल्फों में उलझाकर गीतों की रचना की है। नायक कभी जुल्फों का रंगीन साया तो कभी जुल्फ लहराती चली आयी हो गाते हुए नायिका को संबोधित करता है। कभी जुल्फों को हटा ले चेहरे से थोड़ा सा उजाला होने दे की मांग कर बैठता है। किसी नायक को नायिका की जुल्फ इतनी घनी लगती है कि वह उड़े जब जब जुल्फें तेरी, जुल्फ लहराती चली आई हो, जुल्फों का रंगी साया, तुम्हारी जुल्फों के साए में शाम कर लूंगा की चाहत करने लगता है। किसी का काम केवल आंखों और जुल्फों से नहीं चलता तो वह तेरे होंठ क्या है गुलाबी कमल है, तेरे होंठों के दो फूल प्यारे प्यारे, अपने होठों की बंसी बना ले मुझे, होठों से तुम छू लो, गाते हुए नायिका को लुभाने में कामयाब हो जाता है। कोई नायिका की सुराहीदार गर्दन पर रीझकर सुराहीदार गर्दन तू रूप की है बहार के स्वर छेड़ देता है।

ऐसा नहीं कि नायक केवल आंखों, जुल्फों या होंठों की ही बात करता है। उसे तो नायिका के अंग-अंग से हुस्न टपकता दिखाई देता है। तभी तो वह कहता है चौदहवीं का चांद हो या आफताब हो जो भी हो तुम खुदा की कसम लाजवाब हो। कभी उसे नायिका के गोरे गोरे हाथों पर तरस आता है और वह गा पड़ता है गोरे हाथों पर न जुल्म करो हाजिर है ये बंदा हुकम करो। तो कभी छेड़ते हुए तेरी चाल है नागिन जैसी धीरे रे चलो मोरी बांकी हिरनिया कमर न लचके हाय हाय सजनिया गाने लगता है। शम्मी कपूर जैसे नायक को इस अदा में महारथ हासिल थी। वह नायिका के अंग अंग की तारीफ करते हुए नहीं थकता था। इसी अदा से ये चांद सा रोशन चेहरा जुल्फों का रंग सुनहरा ये झील सी नीली आंखें जैसे गीतों का दर्शकों ने झूम झूमकर आनंद उठाया है। नायिका के सर्वांग सौंदर्य पर जावेद अख्तर ने '1942 ए लव स्टोरी' में एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा में एक से बढ़कर एक उपमाएं दी। ऐसी ही सुंदर उपमा इंदीवर ने 'सरस्वतीचंद्र' में देते हुए लिखा है चंदन सा बदन चंचल चितवन।

राजेन्द्र कुमार को नायिका की सूरत इतनी भायी है कि वह दुआएं देते हुए गाते हैं तेरी प्यारी प्यारी सूरत को किसी की नजर न लगे चश्मे बद्दूर। उनकी एक फिल्म 'जिंदगी' में हसरत जयपुरी नायिका का सौंदर्य गान करते हुए इतने रम गए कि दो अलग-अलग अंतरों में नायिका का अलग-अलग रंग रूप बताने लगे। पहले मिले थे सपनों में कोई एक अंतरे में वह कहते हैं ओ सांवली हसीना तो दूसरे में अचानक उन्हें नायिका गोरी लगने लगती है और वह कहते हैं गोरे बदन पर काला आंचल और रंग ले आया हाय कुर्बान जाऊं! 'धरती' में उन्होंने वहीदा रहमान की तारीफ में गाया था खुदा भी आसमां से जब जमीं पर देखता होगा, मेरे महबूब को किसने बनाया सोचता होगा।

ऐसा नहीं कि फिल्मों में केवल नायिकाओं के ही सौंदर्य की तारीफ की गई है। कई गीत ऐसे भी हैं जो नायकों की तारीफ में लिखे गए हैं। इन गीतों में तेरी नीली नीली आंखों के दिल पर तीर चल गए। तेरी आंखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है? ये आंखे देखकर हम सारी दुनिया भूल जाते हैं, चंदन सा बदन चंचल चितवन, मेरे महबूब में क्या नहीं वो तो लाखों में है एक हंसी, मेरा महबूब है बेमिसाल हाय कमाल हाय कमाल, खुद ढूंढ रही शमा जिसे क्या बात है उस परवाने की जैसे गीत गा गाकर नायिकाएं अपने महबूब की तारीफ में कसीदे पढती रहती है।

बाकी सारे... एक बार, 'जयपुर...', बार-बार!

प्रकाश पुरोहित

जब टीवी एंकर ने मुझसे बजट पर बात पूछी तो याद आया, अरे हां केंद्र सरकार का बजट आने वाला था। जब जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में होते हैं तो फिर कहीं नहीं होते। चार-पांच हजार दर्दियों की उस छोटी-सी दुनिया में ना जाने कैसी ख़ला है कि जैसे सारी दुनिया उसी में समा जाती है। उन चार-पांच दिनों में जैसे बाकी दुनिया से अलग-थलग गृह के निवासी हो जाते हैं और वह जगह ऐसे टापू की तरह हो जाती है कि बाहर निकलने का रास्ता इसलिए नहीं मिलता है कि तलाशना ही नहीं चाहते हैं।

ही नहीं चले कि यहां होटल है। पहले इतनी दुकानें नहीं लगती थीं, जितनी इस बार थीं। 'बाबूजी तुम क्या-क्या खरीदोगे' वाली खाने-पीने के ढेर स्टाल हैं और दाम भी ऐसे कि घर से पराठे बांध कर लाने वाले खूब मिले। हर किसी को दाम और स्वाद नहीं परवड़ता यहां का। ज्यादातर बाहर के बच्चे हैं, जो किसी तरह पैसा बचा कर यहां आते हैं।

हां, किताबों इफरात है यहां की नुमाइश में, ज्यादातर अंग्रेजी की। वैसे माहौल ही पूरी तरह अंग्रेजी का है। इसी से खीज कर राजस्थान के साहित्यकारों ने समानांतर सम्मेलन इसी समय शुरू किया था, जो कुछ साल तो जारी रहा और इस साल तो बंद ही हो गया। फ्लॉप के कर्ताधर्ता भी यहां नजर आए कि उन्हें ससम्मान यहां न्यौता गया है। सबसे अलग और सुखद यह है कि इन पांच दिनों में एक बार भी 'तू जानता नहीं है मेरे को' या 'अभी बताऊं क्या?' 'ज्यादा तेज चल रिया है क्या?' जैसी आवाज कहीं नहीं सुनाई दीं। लड़कियां अति-आधुनिक फैशन में भी आती हैं, लेकिन मजाल कि कोई तिरछी नजर और

यहां... बस, शांति-शांति है...!

'सुबह होती है, शाम होती है' बस यही पता चलता है। सुना था कि विदेशों में ऐसे स्टोर्स होते हैं, जो साल में एक बार सेल लगाते हैं कि जिसके हाथ में जो आए, एक ही दाम में, ले जाए। इसके लिए लोग आधी रात से खड़े होते हैं। ठीक यही हाल है 'जेएलएफ' का रहता है कि पूरे परिसर में ना जाने क्या-क्या बिखरा जा रहा है, बस, समेटने का समय और समझ होनी चाहिए।

'बड़ी मुश्किल में हूं, इधर जाऊं या उधर जाऊं,' वाली हालत हो जाती है। ना ये छूटता है ना वो छोड़ा ही जाता है। कुछ बरसों से आ रहा हूं यहां, लेकिन हर बार, पहले से ज्यादा प्यासे आते हैं यहां! ये सभी अपनी गांठ से पैसे खर्चते हैं और तब अंदर तक आ पाते हैं। फिर भी बाहर लाइन लगी रहती है। कुछ बुर्जुआ यह शिकायत करते पाए जाते हैं कि आजकल के बच्चों को साहित्य और किताबों से कुछ सरोकार नहीं रह गया है, उन्हें यहां आ कर देखना चाहिए कि जब अरुणा रॉय को सुनने के लिए कैसे घंटों पैरों पर खड़े रहते हैं कि कुर्सियां पहले से भर चुकी हैं और ढंग से पैर टिकाने की भी जगह नहीं बची है। एक समय में इतने चेहरे, एक साथ, कोई भी भटक सकता है कि काबा मेरे पीछे है, कलीसा मेरे आगे। यह भी सच है कि झुनझुनों की तरह हर साल जावेद अख्तर या गुलजार बारी-बारी से स्थायी रहते हैं और इनके लिए भीड़ भी खूब होती है। जावेद खुले में भीड़ लगा लेते हैं तो गुलजार बंद हाल में दरवाजे तक भीड़ ले आते हैं। यही क्रेज शशि थरूर का भी है, लेकिन ये गंभीर बात करते हैं और लिखने से इतर सहज अंग्रेजी और हिंदी बोलते हैं।

कभी ये समागम डिग्गी पैलेस में होता था तो तीन साल से जयपुर के होटल क्लार्क आमेर में हो रहा है। डिग्गी पैलेस का शाही रुतबा था कि पहली बार तो जैसे इसे देखकर ही पैसे वसूल हो जाते थे। कुछ नया नहीं था, लेकिन जो पहले का था, उसे ढंग से सहेजा था। फिर शायद शर्तें नहीं जमी और यहां महल से निकल कर होटल में आ गया, लेकिन इन दिनों में इसका होटल वाला चेहरा एकदम बदल जाता है और किसी को बताया नहीं जाए तो पता

बदजुबानी की हिम्मत भी करे। यहां कोई पुलिस का घेरा नहीं लगता है और ना ही बाउंसर ही घूमते रहते हैं, मगर फिर भी कोई इस रियायत का फायदा नहीं लेता। सभी जैसे अपने काम से काम रखते हैं। उनकी निगाह तो अगले सेशन पर रहती है कि कैसे यहां से खत्म हो और वहां कुर्सी मिल जाए या खड़े होने की भी जगह मिल जाए।

यहां भी रुमाल रख कर जगह रोकने वाले कम नहीं हैं, लेकिन जो नियमित आते हैं, ऐसे रुमालियों को डपट देते हैं और खड़े को बैठा देते हैं। यह भी अच्छी बात लगी कि हर रोज किसी एक या दो स्कूल के बच्चों को यहां दिन भर के लिए बुलाया जाता है ताकि भविष्य के लिए पढ़ने वाले तैयार हो सकें। आमतौर पर आयोजक हमेशा हेबले-गेबले नजर आते हैं, जैसे बेटी की बरात दरवाजे पर आ गई हो। बड़े- बड़े आयोजन में आयोजक इंतजाम अली की ही तरह नजर आते हैं, खुद कुछ सुनने या देखने से परे समझते हैं खुद को। यहां संजय के. राय किसी भी हाल या तंबू के किसी कोने में बैठे सुनते दिखाई दे जाते हैं। खुद भी लेखकों से बात करते हैं और शामिल होते हैं। यही हाल नमिता गोखले और डेलरिम्पल का भी है कि इनकी किताबों के यहां फीते खुलते हैं।

इस बार यह बदलाव जरूर खटका कि आयोजन से 'मुगल टेंट' गायब हो गया। पता चला, राजस्थान में भाजपा की सरकार आ गई है तो यह नाम नहीं चलेगा, लेकिन फिर भी केंद्र और राज्य सरकार की खूब खिंचाई हुई, अंग्रेजी में, और आप तो जानते ही हैं कि डंडा उठाने वालों का हाथ अंग्रेजी में कमजोर रहता है, सो कोई हंगामा नहीं हुआ,वरना तो स्टैंड-अप कॉमेडियन के भी खिलाफ खड़े हो जाते हैं अगर हिंदी में बोल रहा है तो....!

और एक अच्छी बात, मुख्यमंत्री रहते वसुंधरा राजे तो फिर भी इधर आती रही हैं कि अंग्रेजी जानती थीं, लेकिन अभी तो कोई मंत्री फटकता भी नहीं, डर है किसी ने कुछ पूछ ही लिया तो क्या समझेंगे और क्या जवाब देंगे! इसलिए बैठकें सही समय पर शुरू और तय वक्त पर खत्म होती रहीं!

अगली बार के लिए मन बना लें!

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

ज़िंदगी में पासवर्ड डाला क्या?

ये कैसा सवाल है कोई ज़िंदगी में पासवर्ड क्यों डाले? ये मेरी ज़िंदगी है। ईमानदारी से बताइये क्या अपना मोबाइल यूँ ही छोड़ देते हैं घर में आप? पति पत्नी साथ साथ भी किसी पार्टी में जाते हैं तो अपने अपने मोबाइल मुट्ठी में कसे रहते हैं, बाहर वालों की छोड़िये घर वालों के पास एक दूसरे का पासवर्ड नहीं रहता। किसी मजबूरीवश अगर दूसरे को पासवर्ड बताना भी पड़ता है तो झट से बदल दिया जाता है अब आप कहेंगे ज़िंदगी में पासवर्ड की ज़रूरत क्यों है सब अपने ही तो हैं अपने माँ बाप, भाई बहन, पति पत्नी बच्चे वगैरह। तो क्या आपका जीवन खुली किताब है जिसे आप सबको पढ़ने देंगे।

मैं जिन चीज़ों की बात कर रही हूँ कुछ अवांछित रिश्ते जो आपकी ज़िंदगी में हमेशा हलचल मचाते रहते हैं बिना खटखटाये आपकी ज़िंदगी में घुस जाते हैं क्योंकि आपने अपनी ज़िंदगी में पासवर्ड नहीं डाला भला वो कैसे करें अभी बताती हूँ। कोई ऐसा दोस्त जो आपका करीबी है, पुराना है पर यदि आप उससे कोई बात शेअर करें तो 1 घंटे में पूरे शहर में बात फैल जाती है, जुबाँ पे पासवर्ड जो नहीं डाला। अच्छी खासी ज़िंदगी चल रही है अचानक पुरानी यादों ने (बुरी वाली) आपको घेर लिया कि पासवर्ड नहीं लगाया।

चाहने पर आती नहीं (अच्छी यादें)
धकेलने पर जाती नहीं (पुरानी यादें)
बेशऊर यादों को मैनर्स सिखाओ ज़रा
दुख, बुरे विचार, बुरे शब्द, बुरे गुजरे हालात सब लाइन लगा कर खड़े हैं। आप कहेंगे नहीं जनाब अच्छी यादें भी हैं, खुशियाँ हैं, दोस्त हैं, रिश्तेदार हैं सच बताइये आप दोनों में से किससे ज़्यादा घिरे रहते हैं नकारात्मक यादों से ना तो कोई तरकीब तो लड़ानी ही पड़ेगी। रिश्तेदार, दोस्त जिनको आप प्यार तो करते हैं पर उनको इतनी आज़ादी किसने दी कि वो आपकी ज़िंदगी में घुसे चले

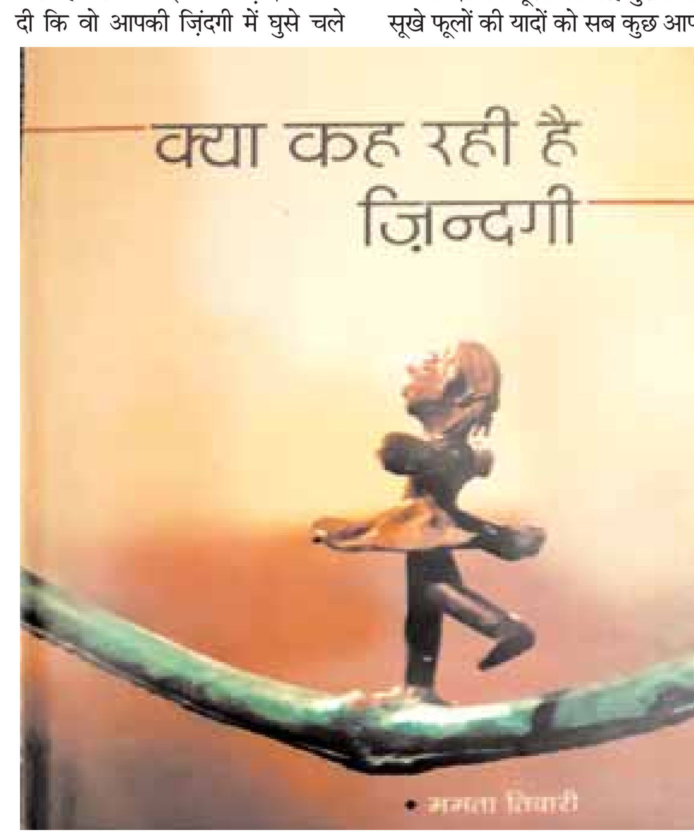

आते हैं। ये परमीशन आपने ही दी है। यदि आप पहले ही उनके लिये सीमा रेखा का पासवर्ड बना देते कि आपका दखल यहीं तक है, तो एक बार उन्हें खराब लगता फिर वो इसके आदि हो जायेंगे। अपनी सकारात्मक सोच से बुरी सोच पर पासवर्ड लगाइये कुछ ऐसा करिये जिससे आपकी खुशी जीत जाये और पुराना दुःख हार जाये। उसी तरह यादों के साथ है अपनी आगे आने वाली यादों को आप अभी तो नहीं देख सकते पर वो आपका वर्तमान ही है तो अपने खूबसूरत वर्तमान से ढक दीजिये फूलों की तरह पुराने बासी सूखे फूलों की यादों को सब कुछ आपके हाथ में है। हाँ पासवर्ड थोड़े ज़्यादा हैं। साथ में कुछ रिश्ते ऐसे भी हैं जो खून के हैं उनके साथ पासवर्ड का इस्तेमाल कैसे किया जाये उसके लिये मैंने एक बार लिखा

''उनसे झूठ मत बोलिये''
''पर उन्हें सच भी ना बताये''

बात दिल की दिल में रहेगी लॉक भी रहेगी अपना सच उन्हें बतायें जो आपकी खुशी से खुश होते हैं। लीजिये आज आपको रिसेप्शन में जाना है एक नहीं तीन तीन अगर कुछ ना खाया तो वो बुरा मान जायेंगे, पेट बाद में बुरा मान जायेगा, वजन खुशी खुशी दौड़ा आयेगा फिर क्या करेंगे। यहाँ आपको पासवर्ड की सख़्त जरूरत है जुबान पे लागने की। पहली पार्टी में सलाद खाइये, दूसरी में सूप हल्का फुल्का भोजन, तीसरी में थोड़ा सा मीठा। देखिये पेट, जुबान आपकी रिसेप्शन तीनों की इज्ज़त रह गई पासवर्ड भी नहीं खोलना पड़ा। एक सीरियल और देख लूँ, अरे ये तो मेरा फेवरेट वाला है बस थोड़ा सा, कौन सी भई पिक्चर का ट्रेलर आया, टी.वी. पर तुरंत पासवर्ड डालिये क्लॉक के साथ कि वो आपके लिये भी ना खुले (हालांकि ऐसा होता नहीं है)। मन को मजबूत बनाना होगा, कई चीज़े ऐसी हैं जिसमें दिल दिमाग की मजबूती चाहिये तो बिस्तर से टी.वी. ना देखें तो बेहतर, ध्यान कीजिये घर में खुशबू, गीतों के पासवर्ड खोल दीजिये। नकारात्मक चीजों पर इतना लंबा पासवर्ड डालिये कि याद ही ना आये या पासवर्ड डाल कर भूल जाये। ज़िंदगी की सभी बुरी आदतों पर पासवर्ड लगाना ज़रूरी है बस इसके लिये प्रैक्टिस की ज़रूरत होगी मैंने तो डायरी भी बना ली क्योंकि पासवर्ड संख्या में ज़्यादा हें तो सबको लिख लिया। पर डायरी लॉफ्ट पर डाल दी कि ज़रूरत ना पड़े जबर्दस्ती मन में घुसती चीज़ से विचलित हो जाते हैं उसको दूर करने का पासवर्ड क्या हो आप खुद सोच सकते हैं। मेरे पास जो था, या मैं जो करने की कोशिश कर रही हूँ आपको बता दिया बस आप आपने और अपनी ज़िंदगी के बीच कोई पासवर्ड (पर्दा) ना लगाना। उससे पूछते रहना और क्या कह रही हो ज़िंदगी?

नि:शब्द ...

फोटो: बंसीलाल परमार

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

इससे बड़ा सेलेब्रिटी स्टेटस भला और कौन सा होगा

अब तिवारी जी को अफसोस हो रहा है कि वो समय पर क्यूँ नहीं चेते। उनके चेहरे पर चिंतन, अफसोस और गुस्से की त्रिवेणी बह रही है। अफसोस का विषय भी त्रिवेणी से ही संबंधित है अतः त्रिवेणी अकारण ही नहीं है चेहरे पर।

उनके क्षोभ के केंद्र में उनके पिता जी हैं जिनको गुजरे हुए भी 30 बरस हो चुके हैं। दरअसल उनके पिता जी ही नहीं, दादा जी भी इसी शहर की उन्हीं गलियों में बड़े हुए जिसमें तिवारी जी स्वयं बड़े हुए। इस मामले में यह शहर उनका पुश्तैनी शहर है। छोटा है मगर है तो पुश्तैनी शहर। दादा जी की तरह ही तिवारी जी के पिता जी को भी इस बात का गर्व था और वही पुश्तैनी गर्व तिवारी जी को भी विरासत में मिला था जिसे वह अब तक सर पर बैठा कर रखते थे। जवानी में कोई कहता भी कि किसी बड़े शहर में जाओ और कुछ बड़े काम को अंजाम दो, तो तिवारी जी तमतमा जाते। कहते कि होते होंगे नमकहराम लोग मगर हम चंद सिक्कों की ख्वाहिश में अपने प्यारे शहर को कभी नहीं छोड़ेंगे। फिर वो नोसटॉलजिक हो जाते।

कैसे छोड़ दें यार इस शहर को। यहाँ की सड़कें, यहाँ की गलियां यहाँ के लोग, इस शहर की आबो हवा -सब तो अपनी हैं। आज तक जो भी पहचान मिली है, जो भी मुकाम हासिल किया है- सब इसी शहर की तो देन है और लोग कहते हैं कि किसी बड़े शहर चले जाओ? ये भी क्या बात हुई? बड़े शहर में भी खाएंगे तो रोटी दाल ही तो वो तो यहाँ भी मिल ही रही है, फिर किसलिए पैसे के पीछे भागें?

खैर यह तो तिवारी जी कह रहे हैं मगर जानने वाले तो जानते ही हैं कि पहचान के नाम पर सिर्फ चौराहे पर पान की दुकान पर फोकट में ज्ञान बांटना और मुकाम के नाम पर नित घर से निकल कर पान की दुकान और रात में दारू पी कर घर वापसी से आगे कुछ भी हासिल न हुआ ताजिंदगी।

थोड़ा बहुत जो पैसा आता है वो या तो दलाली से या किराये से- एक कमरे की दुकान जो एक कमरे के घर के नीचे विरासत में मिली। दलाली भी नगर निगम के कामों की किया करते क्यूंकी पार्षद उनका शागिर्द रहा हमेशा से। उसे भी ऐसे ही खाली लोगों की जरूरत रहती है चुनाव जीतने के लिए। लोग बताते हैं कि बंद कमरे में ये पार्षद महोदय के पैर छूते हैं मगर चौराहे पर उनकी अनुपस्थिति में उन्हें अपना चेला और शागिर्द बताते हैं ताकि दलाली चलती रहे।

तिवारी जी की महारत जिंदा लोगों को मरे का सर्टिफिकेट दिलाने में थी। इसमें मोटा पैसा भी था। प्रधानमंत्री रोजगार योजना में एक लाख का कर्ज लेकर उसे माफ कराने का एक मात्र तरीका था कि ऋणधारी की मृत्यु हो जाए। बस यही महीन शब्दों में लिखी जानकारी तिवारी जी के हाथ लग गई थी। तब से प्रधान मंत्री से ज्यादा इस योजना का प्रसार प्रचार तिवारी जी करने लग गए। सबसे कहा करते कि सरकार तुम्हें कर्ज देगी, मैं तुम्हें कर्ज माफी दिलाऊँगा। 25त्न दलाली पर भला कौन न मान जाता वो भी ऐसे शहर के वाशिंदे -जहां कर्ज ही एक मात्र पूंजी है लोगों की। वरना विकास के नाम पर ब्याज का ही विकास होता आया है।

खैर, तिवारी जी के अफसोस का विषय आज यह रहा कि इनके पिता जी बचपन में इनको लेकर मुंबई या दिल्ली क्यूँ नहीं चले गए? कुछ ढंग का काम करते। बच्चों को पढ़ाते लिखाते। तो तिवारी जी भी ऐरोस्पेस साइंस में आईआईटी कर लेते और आज इस दिव्य कुम्भ में आईआईटी वाले बाबा बन कर सेलेब्रिटी स्टेटस पा गए होते।

अब तिवारी जी को कौन समझाए कि दिल्ली मुंबई में भी 12 वीं फेल बच्चे बैठे हैं- सब बच्चे आईआईटी में नहीं चले जाते हैं। छोटे छोटे कस्बों से भी बच्चे आईआईटी में जाते हैं। साथ ही हर आईआईटी पास कर लेने वाला बच्चा बाबा नहीं बन जाता और हर बाबा आईआईटी वाला नहीं होता।

और जहां तक सेलेब्रिटी स्टेटस की बात है तो वह तो आप गाँव में चाय बेच कर और 12 वीं फेल होकर भी पा सकते हैं। जरूरत है जज्बे की। महा जन नायक से बड़ा सेलेब्रिटी स्टेटस भला और कौन सा होगा।